गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 080
दि. 19.07.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

अहमदाबाद में बारुद बना मौत का जाल: पटाखा फैक्ट्री में भीषण विस्फोटों के बाद लगी आग, 8 की मौत, कई घायल; प्रधानमंत्री ने जताया शोक

अहमदाबाद। गुजरात के अहमदाबाद से शनिवार को एक दर्दनाक औद्योगिक हादसे की खबर सामने आई, जिसने पूरे शहर को झकझोर कर रख दिया। शहर के महमूदपुरा क्षेत्र स्थित गैट्रेड रोड पर संचालित टैलेंट फायरवर्क्स नामक पटाखा फैक्ट्री में अचानक भीषण आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और फैक्ट्री के भीतर रखे विस्फोटक पदार्थों में लगातार धमाके होने लगे। विस्फोटों की तीव्रता इतनी अधिक थी कि कई किलोमीटर दूर तक उनकी आवाज सुनाई दी और आसपास की इमारतें तक कांप उठीं। कुछ ही मिनटों में पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। लोग अपनी जान बचाने के लिए घरों और दुकानों से बाहर निकल आए, जबकि फैक्ट्री के भीतर काम कर रहे कई मजदूर आग और धुएं के बीच फंस गए।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार इस भीषण हादसे में अब तक आठ लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि 15 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं। आशंका जताई जा रही है कि घायलों की संख्या बढ़ सकती है, क्योंकि कुछ लोगों की हालत गंभीर बनी हुई है। हादसे की सूचना मिलते ही दमकल विभाग, पुलिस, आपदा प्रबंधन दल और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंच गए तथा बड़े स्तर पर राहत एवं बचाव अभियान शुरू किया गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आग लगने के कुछ ही क्षण बाद फैक्ट्री के भीतर से लगातार तेज धमाकों की आवाजें आने लगीं। हर विस्फोट के साथ आग की लपटें और ऊंची होती गईं तथा घना काला धुआं पूरे क्षेत्र में फैल गया। धमाकों के कारण आसपास रहने वाले लोगों में दहशत फैल गई। कई परिवारों ने एहतियात के तौर पर अपने घर खाली कर दिए। स्थानीय लोगों ने बताया कि कुछ विस्फोट इतने शक्तिशाली थे कि आसपास की खिड़कियों के शीशे तक हिल गए और कई स्थानों पर कंपन महसूस किया गया।

सूचना मिलते ही अहमदाबाद फायर एंड इमरजेंसी सर्विस की कई टीमें घटनास्थल पर पहुंचीं। आग की गंभीरता को देखते हुए राहत अभियान में एक मिनी फाइटर, 20 हजार लीटर क्षमता वाले दो वाटर बाउजर, दो रैपिड इंटरवेंशन व्हीकल (आरआईवी) तथा एक एम्बुलेंस को तुरंत तैनात किया गया। मुख्य अग्निशमन अधिकारी, अतिरिक्त मुख्य अग्निशमन अधिकारी, उप मुख्य अग्निशमन अधिकारी, डिविजनल फायर ऑफिसर तथा स्टेशन फायर ऑफिसर स्वयं मौके पर पहुंचकर पूरे अभियान की निगरानी करते रहे। दमकल कर्मियों को लगातार हो रहे विस्फोटों के बीच आग बुझाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, फिर भी उन्होंने जोखिम उठाकर फैक्ट्री

परिसर में फंसे लोगों को बाहर निकालने का प्रयास जारी रखा।

हादसे में घायल हुए लोगों को तत्काल विभिन्न अस्पतालों में भर्ती कराया गया। अधिकारियों के अनुसार एलजी अस्पताल में पांच घायलों का उपचार चल रहा है, जबकि सिविल अस्पताल में चार घायलों को भर्ती कराया गया है। अन्य घायलों का इलाज शहर के विभिन्न अस्पतालों में किया जा रहा है। डॉक्टरों की टीमें घायलों के उपचार में जुटी हुई हैं और गंभीर रूप से झुलसे मरीजों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है।

जानकारी के अनुसार जिस फैक्ट्री में यह हादसा हुआ, उसका संचालन मेहुल डोडिया नामक व्यक्ति द्वारा किया जाता है। फैक्ट्री में बड़ी मात्रा में पटाखों और विस्फोटक सामग्री का भंडारण किया जाता था। आग लगने के समय फैक्ट्री में कई कर्मचारी कार्यरत थे। अचानक आग फैलने और उसके बाद हुए विस्फोटों के कारण अधिकांश कर्मचारियों को बाहर निकलने का पर्याप्त समय नहीं मिल सका। यही वजह है कि जनहानि इतनी अधिक हुई।

हादसे की गंभीरता को देखते हुए अहमदाबाद के महापौर, नगर आयुक्त तथा नगर निगम और जिला प्रशासन के कई वरिष्ठ अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे। अधिकारियों ने राहत एवं बचाव कार्य का जायजा लिया और संबंधित एजेंसियों को तेजी से अभियान चलाने के निर्देश दिए। पुलिस ने पूरे इलाके को घेरकर आम लोगों की आवाजाही रोक दी ताकि बचाव कार्य में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। आसपास के क्षेत्रों को भी एहतियातन खाली कराया गया।

फिलहाल आग लगने के वास्तविक कारणों का पता नहीं चल सका है। प्रारंभिक स्तर पर आशंका जताई जा रही है कि फैक्ट्री में रखी ज्वलनशील और विस्फोटक सामग्री के कारण आग ने कुछ ही मिनटों में विकराल रूप धारण कर लिया। हालांकि अधिकारी किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले विस्तृत जांच का इंतजार करने की बात कह रहे हैं। पुलिस, फायर विभाग और फॉरेंसिक विशेषज्ञों की संयुक्त टीम घटनास्थल से साक्ष्य जुटा रही है। जांच में यह भी देखा जाएगा कि फैक्ट्री में सुरक्षा मानकों का पालन किया जा रहा था या नहीं, अग्निशमन व्यवस्था पर्याप्त थी या नहीं तथा लाइसेंस और सुरक्षा संबंधी सभी नियमों का अनुपालन किया गया था या नहीं। यदि जांच में किसी प्रकार की लापरवाही सामने आती है तो जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

घटना के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने इस दुर्घटना को अत्यंत दुखद बताते हुए मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना प्रकट की। प्रधानमंत्री ने अपने शोक संदेश में कहा कि इस कठिन समय में उनकी संवेदनाएं शोकाकुल परिवारों के साथ हैं तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने यह भी कहा कि स्थानीय प्रशासन प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता उपलब्ध करा रहा है। प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (PMNRF) से मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख रुपये तथा प्रत्येक घायल को 50-50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा भी की।

इस हादसे ने एक बार फिर पटाखा उद्योग में सुरक्षा मानकों को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में समय-समय पर पटाखा फैक्ट्रियों में आग और विस्फोट की घटनाएं सामने आती रही हैं, जिनमें बड़ी संख्या में लोगों की जान जा चुकी है। विशेषज्ञों का मानना है कि विस्फोटक सामग्री से जुड़े उद्योगों में सुरक्षा नियमों का कठोरता से पालन, नियमित निरीक्षण, कर्मचारियों को प्रशिक्षण और आधुनिक अग्निशमन उपकरणों की उपलब्धता अत्यंत आवश्यक है। थोड़ी-सी लापरवाही भी बड़े हादसे का कारण बन सकती है।

फिलहाल दमकल विभाग आग पर पूरी तरह काबू पाने के साथ-साथ फैक्ट्री परिसर में फंसे लोगों की तलाश में जुटा हुआ है। मलबे को हटाने का कार्य भी सावधानीपूर्वक किया जा रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भीतर कोई व्यक्ति फंसा न रह गया हो। प्रशासन ने कहा है कि बचाव अभियान पूरा होने के बाद ही नुकसान का वास्तविक आकलन किया जा सकेगा।

अहमदाबाद की यह घटना केवल एक औद्योगिक दुर्घटना नहीं, बल्कि उन सुरक्षा व्यवस्थाओं की भी गंभीर परीक्षा है, जिन पर हजारों श्रमिकों का जीवन निर्भर करता है। अब सभी की निगाहें जांच रिपोर्ट पर टिकी हैं, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि आखिर इस भीषण आग और विस्फोट के पीछे क्या कारण थे और इस दर्दनाक हादसे के लिए जिम्मेदार कौन है। तब तक पूरे शहर में शोक और चिंता का माहौल बना हुआ है, जबकि मृतकों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और घायल अस्पतालों में जीवन के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस बीच, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने भी अहमदाबाद की इस दर्दनाक दुर्घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने अपने शोक संदेश में कहा कि अहमदाबाद की पटाखा फैक्ट्री में हुई दुर्घटना अत्यंत दुखद है। उन्होंने हादसे में जान गंवाने वाले लोगों की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार इस कठिन समय में प्रभावित परिवारों के साथ पूरी मजबूती से खड़ी है। स्थानीय प्रशासन को राहत एवं बचाव कार्य में तेजी लाने तथा घायलों को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने दुर्घटना में घायल सभी नागरिकों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने मृतकों के परिजनों के लिए राज्य सरकार की ओर से चार-चार लाख रुपये की आर्थिक सहायता तथा प्रत्येक घायल को 50-50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की। उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिया कि राहत एवं पुनर्वास कार्य में किसी प्रकार की कोताही न बरती जाए और प्रभावित परिवारों को हरसंभव सहायता तत्काल उपलब्ध कराई जाए।

इस प्रकार हादसे के बाद केंद्र और राज्य सरकार दोनों ने मृतकों के परिजनों तथा घायलों के लिए आर्थिक सहायता की घोषणा की है। जहां प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (PMNRF) से मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये दिए जाएंगे, वहीं गुजरात सरकार की ओर से मृतकों के आश्रितों को चार-चार लाख रुपये तथा घायलों को 50-50 हजार रुपये की अतिरिक्त सहायता प्रदान की जाएगी। इससे मृतकों के परिजनों को कुल छह-छह लाख रुपये तथा घायलों को कुल एक-एक लाख रुपये की आर्थिक सहायता मिलेगी।

'बागी लौट आएं तो एक घंटे में इस्तीफा दे दूंगा': अभिषेक बनर्जी का बड़ा राजनीतिक दांव, भाजपा पर लगाए गंभीर आरोप

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बार फिर सियासी बयानबाजी तेज हो गई है। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के राष्ट्रीय महासचिव और सांसद अभिषेक बनर्जी ने पार्टी छोड़कर गए नेताओं को लेकर बड़ा बयान देते हुए कहा कि यदि उनके विरोध में पार्टी छोड़ने वाले सभी बागी नेता वापस तृणमूल कांग्रेस में लौट आते हैं, तो वह एक घंटे के भीतर अपने पद से इस्तीफा देने के लिए तैयार हैं। उनके इस बयान को बंगाल की राजनीति में महत्वपूर्ण संकेत के तौर पर देखा जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह बयान न केवल पार्टी छोड़ चुके नेताओं को संदेश देने की कोशिश है, बल्कि टीएमसी के भीतर संगठनात्मक एकजुटता का प्रदर्शन भी माना जा रहा है। कोलकाता में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अभिषेक बनर्जी ने बिना किसी नेता का नाम लिए कहा कि पार्टी के कुछ नेताओं ने ऐसे समय में तृणमूल कांग्रेस का साथ छोड़ा था, जब संगठन कठिन दौर से गुजर

रहा था और विभिन्न प्रकार के दबाव बनाए जा रहे थे। उन्होंने कहा कि उस समय कई लोगों ने व्यक्तिगत हितों को प्राथमिकता दी, जबकि हजारों कार्यकर्ताओं ने तमाम चुनौतियों के बावजूद पार्टी का साथ नहीं छोड़ा और जनता के बीच रहकर संगठन को मजबूत बनाए रखा। अभिषेक बनर्जी ने अपने संबोधन में कहा कि यदि वे सभी नेता, जिन्होंने अलग रास्ता चुना था, आज वापस पार्टी में शामिल हो जाएं तो वह बिना किसी हिचकिचाहट के अपने पद से इस्तीफा दे देंगे। उन्होंने कहा कि उन्हें किसी पद से मोह नहीं है और पार्टी तथा संगठन उनके लिए व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उनका कहना था कि टीएमसी की असली ताकत उसके समर्पित कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने हर कठिन परिस्थिति में पार्टी के साथ खड़े रहकर संघर्ष किया। अपने भाषण के दौरान अभिषेक बनर्जी ने केंद्रीय जांच एजेंसियों के इस्तेमाल को लेकर भी गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने दावा किया कि पार्टी के कुछ नेताओं पर प्रशासनिक और जांच एजेंसियों के माध्यम से दबाव बनाया गया, जिसके कारण उन्होंने तृणमूल कांग्रेस छोड़ने का फैसला किया। उनका आरोप था कि कुछ नेताओं को इस तरह की परिस्थितियों में पार्टी से अलग होने के लिए मजबूर किया गया। टीएमसी सांसद ने भारतीय जनता पार्टी पर भी तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने राजनीतिक लाभ हासिल करने के उद्देश्य से विपक्षी दलों के नेताओं को अपने पक्ष में करने की रणनीति अपनाई। उनके अनुसार कुछ नेताओं को भाजपा के साथ जाने या अलग राजनीतिक गुट बनाने के लिए प्रेरित किया गया। अभिषेक बनर्जी ने यह भी दावा किया कि ऐसे नेताओं को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) जैसी केंद्रीय जांच एजेंसियों की कार्रवाई से राहत मिलने का भरोसा दिया गया और बदले में उनसे तृणमूल कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ बयान देने तथा पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करने के लिए कहा गया। हालांकि उन्होंने अपने आरोपों के समर्थन में किसी विशेष मामले या नेता का नाम नहीं लिया, लेकिन उनका बयान ऐसे समय आया है जब पश्चिम बंगाल की राजनीति में दल-बदल, केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई और राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप लगातार चर्चा का विषय बने हुए हैं।

अमेरिका-ईरान टकराव ने बढ़ाई पश्चिम एशिया की चिंता: ईरान ने इस्लामाबाद समझौते की प्रतिबद्धताएं निलंबित कीं, खाड़ी देशों को दी कड़ी चेतावनी

तेहरान। अमेरिका और ईरान के बीच लगातार बढ़ रहे सैन्य तनाव के बीच पश्चिम एशिया की स्थिति और अधिक संवेदनशील हो गई है। अमेरिकी सैन्य कार्रवाइयों के बाद ईरान ने बड़ा कूटनीतिक कदम उठाते हुए इस्लामाबाद समझौते के तहत अपनी सभी प्रतिबद्धताओं को निलंबित करने की घोषणा की है। तेहरान का आरोप है कि अमेरिका ने समझौते की मूल शर्तों का उल्लंघन किया है, इसलिए अब ईरान भी उसके प्रावधानों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं है। इस फैसले के बाद क्षेत्रीय सुरक्षा, कूटनीतिक संबंधों और ऊर्जा आपूर्ति को लेकर नई चिंताएं पैदा हो गई हैं।

ईरानी सरकार का कहना है कि मौजूदा परिस्थितियों में उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता देश की संप्रभुता और राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करना है। ईरान के उप विदेश मंत्री काजेम गरीबाबादी ने कहा कि वर्तमान हालात असाधारण हैं और देश पूरी तरह अपनी सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक क्षेत्र में तनाव कम नहीं होता और सामान्य परिस्थितियां बहाल नहीं होतीं, तब तक इस्लामाबाद समझौते के तहत ईरान की सभी प्रतिबद्धताओं का क्रियान्वयन स्थगित रहेगा। गरीबाबादी ने कहा कि ईरान किसी भी प्रकार के बाहरी दबाव में अपने राष्ट्रीय हितों से समझौता नहीं करेगा। उनके अनुसार, अमेरिका की हालिया सैन्य कार्रवाइयों ने क्षेत्र की स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है और ऐसे माहौल में पहले की तरह समझौते का पालन करना व्यावहारिक नहीं है।

तनाव के बीच इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) ने भी कड़ा बयान जारी किया है। आईआरजीसी ने खाड़ी क्षेत्र के देशों को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि किसी भी देश की भूमि, हवाई क्षेत्र या सैन्य सुविधाओं का उपयोग ईरान के खिलाफ हमलों के लिए किया गया, तो उसे भी वैसी ही जवाबी कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। आईआरजीसी ने कहा कि ईरान अपनी सुरक्षा से किसी प्रकार का समझौता नहीं करेगा और किसी भी हमले का जवाब उसी स्तर पर दिया जाएगा।

ईरान की इस चेतावनी के बाद खाड़ी क्षेत्र के देशों की चिंता बढ़ गई है। इस क्षेत्र में अमेरिका के कई महत्वपूर्ण सैन्य अड्डे मौजूद हैं और कई देशों में अमेरिकी सैनिक तैनात हैं। ऐसे में यदि संघर्ष और बढ़ता है तो उसका प्रभाव केवल अमेरिका और ईरान तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरे पश्चिम एशिया की सुरक्षा व्यवस्था प्रभावित हो सकती है।

दूसरी ओर, क्षेत्रीय तनाव को कम करने के प्रयास भी जारी हैं। पाकिस्तान और कुवैत ने अमेरिका तथा ईरान दोनों से संयम बरतने की अपील की है। दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच हुई बातचीत में क्षेत्रीय शांति बनाए रखने पर जोर दिया गया और सभी पक्षों से कूटनीतिक समाधान की दिशा में आगे बढ़ने का आग्रह किया गया। पाकिस्तान और कुवैत ने पिछले महीने हुए समझौते की भावना का सम्मान करने और किसी भी ऐसे कदम से बचने की अपील की, जिससे क्षेत्र में तनाव और बढ़े। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि दोनों पक्ष सैन्य कार्रवाई जारी रखते हैं, तो इसका असर पूरे मध्य पूर्व की राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता पर पड़ सकता है। खाड़ी क्षेत्र विश्व के सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा आपूर्ति केंद्रों में से एक है और यहां किसी भी प्रकार का सैन्य संघर्ष वैश्विक तेल बाजार तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर व्यापक प्रभाव डाल सकता है।

इस बीच होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर भी स्थिति लगातार तनावपूर्ण बनी हुई है। यह समुद्री मार्ग दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा गलियारों में गिना जाता है, जहां से बड़ी मात्रा में कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस का परिवहन होता है। अमेरिका और ईरान के बीच इस क्षेत्र में बढ़ती सैन्य गतिविधियों ने अंतरराष्ट्रीय समुद्री सुरक्षा को लेकर भी चिंताएं बढ़ा दी हैं। हालिया घटनाक्रम में दोनों पक्षों की ओर से सैन्य और रणनीतिक ठिकानों को निशाना बनाए जाने के दावे किए गए हैं। इसके साथ ही कुवैत में कुछ महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को नुकसान पहुंचने और उड़ान सेवाओं पर असर पड़ने की भी खबरें सामने आई हैं। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि अभी तक नहीं हो सकी है।

'वंदे मातरम' के साथ अंतरिक्ष में भारत की नई उड़ान: स्काईरूट एयरोस्पेस ने रचा इतिहास, विक्रम-1 बना देश का पहला निजी ऑर्बिटल क्लास रॉकेट

श्रीहरिकोटा। भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय के सामने अपनी तकनीकी क्षमता का नया परिचय दिया है। देश की निजी अंतरिक्ष कंपनी स्काईरूट एयरोस्पेस ने शनिवार को अपने पहले निजी रूप से विकसित ऑर्बिटल क्लास लॉन्च व्हीकल 'विक्रम-1' का सफल प्रक्षेपण कर भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में नया अध्याय जोड़ दिया। श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरने वाला विक्रम-1 भारत की धरती से लॉन्च होने वाला पहला निजी रूप से विकसित ऑर्बिटल क्लास रॉकेट बन गया। इस सफलता को भारत के निजी अंतरिक्ष उद्योग के लिए मील का पत्थर माना जा रहा है, क्योंकि इससे यह स्पष्ट संकेत मिला है कि अब भारतीय निजी कंपनियां भी उपग्रह प्रक्षेपण और उन्नत अंतरिक्ष तकनीक के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही हैं।

मिशन की सफलता के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्काईरूट एयरोस्पेस के सह-संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी पवन कुमार चंदना और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों से फोन पर बातचीत कर उन्हें बधाई दी। प्रधानमंत्री ने इस उपलब्धि को भारत की वैज्ञानिक प्रतिभा, नवाचार और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि यह केवल एक रॉकेट का प्रक्षेपण नहीं, बल्कि नए भारत की तकनीकी शक्ति और युवा क्षमता का प्रतीक है।

प्रधानमंत्री मोदी ने इस मिशन को 'वंदे मातरम मिशन' की संज्ञा देते हुए कहा कि इसका उद्देश्य केवल अंतरिक्ष तक पहुंचना नहीं, बल्कि भारत माता की प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक ले जाना, युवाओं में विज्ञान और तकनीक के प्रति रुचि बढ़ाना तथा उन्हें अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में योगदान देने के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने कहा कि कुछ वर्ष पहले तक आत्मनिर्भर भारत के संकल्प पर प्रश्न उठाए जाते थे, लेकिन आज भारत ने यह साबित कर दिया है कि वह केवल सरकारी संस्थानों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि निजी क्षेत्र की भागीदारी के साथ भी विश्वस्तरीय अंतरिक्ष तकनीक विकसित करने की क्षमता रखता है।

इस ऐतिहासिक मिशन की सबसे विशेष बात यह रही कि विक्रम-1 अपने साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हाथ से लिखा 'वंदे मातरम' संदेश भी पृथ्वी की कक्षा में लेकर गया। प्रधानमंत्री के हस्तलिखित संदेश वाले पोस्टकार्ड के अलावा भारतीय वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और अंतरिक्ष यात्रियों के संदेश भी इस मिशन का हिस्सा बनाए गए। यह पहल केवल तकनीकी उपलब्धि तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसे भारत की वैज्ञानिक यात्रा और राष्ट्रीय भावना के प्रतीक के रूप में भी देखा जा रहा है।

स्काईरूट एयरोस्पेस की स्थापना वर्ष 2018 में पवन कुमार चंदना और उनकी टीम ने की थी। पवन चंदना इससे पहले भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में वैज्ञानिक के रूप में पांच वर्ष से अधिक समय तक कार्य कर चुके हैं। उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक तथा थर्मल साइंस एंड इंजीनियरिंग में एमटेक की पढ़ाई की है। इसरो के अनुभव और निजी क्षेत्र के नवाचार को साथ लेकर उन्होंने स्काईरूट एयरोस्पेस की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य भारत को निजी अंतरिक्ष प्रक्षेपण क्षमता प्रदान करना था। कुछ ही वर्षों में कंपनी ने अनुसंधान, परीक्षण और तकनीकी विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति करते हुए विक्रम-1 जैसे उन्नत लॉन्च व्हीकल को विकसित कर दिया।

तकनीकी दृष्टि से विक्रम-1 आधुनिक भारतीय इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट उदाहरण माना जा रहा है। इसे विशेष रूप से छोटे और मध्यम आकार के उपग्रहों को पृथ्वी की निचली कक्षा (Low Earth Orbit) में स्थापित करने के लिए तैयार किया गया है। यह लगभग 350 किलोग्राम तक के उपग्रहों को अंतरिक्ष में ले जाने की क्षमता रखता है। तेजी से बढ़ते वैश्विक स्मॉल सैटेलाइट बाजार को देखते हुए इस प्रकार के लॉन्च व्हीकल की मांग लगातार बढ़ रही है और विशेषज्ञों का मानना है कि विक्रम-1 भारत को इस क्षेत्र में नई प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त दिला सकता है।

करीब सात मंजिला ऊंचाई वाले इस बहु-चरणीय रॉकेट में अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग किया गया है। इसकी संरचना में कार्बन कंपोजिट सामग्री का प्रयोग किया गया है, जिससे रॉकेट का वजन कम होने के साथ उसकी मजबूती भी बढ़ती है। इसमें पूरी तरह स्वदेशी सॉलिड और लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम लगाए गए हैं। इसके अलावा रॉकेट में 3D-प्रिंटेड इंजन, उच्च क्षमता वाले ठोस रॉकेट बूस्टर तथा आधुनिक नियंत्रण प्रणाली जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग किया गया है। इन तकनीकों के कारण रॉकेट की निर्माण लागत कम होने के साथ उसकी विश्वसनीयता और दक्षता भी बढ़ी है।

विक्रम-1 की पहली उड़ान केवल तकनीकी परीक्षण तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें कई महत्वपूर्ण पेलोड भी अंतरिक्ष में भेजे गए। मिशन के साथ स्काईरूट एयरोस्पेस का स्कोप (SCOPE) पेलोड, ग्रहा स्पेस का सोलरस एस-3 उपग्रह, डीसीयूबीईडी का टेक्नोलॉजी डेमोंस्ट्रेशन पेलोड तथा कॉस्मोसर्व स्पेस का एम्ब्रेस रोबोटिक आर्म भी अंतरिक्ष में भेजा गया। इन पेलोड्स का उद्देश्य विभिन्न तकनीकों का परीक्षण करना तथा भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए आवश्यक आंकड़े जुटाना है।

इस मिशन में विज्ञान और तकनीक के साथ भारतीय सांस्कृतिक भावनाओं का भी विशेष समावेश देखने को मिला। कॉस्मॉस डायमंड्स द्वारा तैयार कलाकृति 'कॉस्मिक ब्लूम' भी विक्रम-1 के साथ अंतरिक्ष में भेजी गई। इसके अतिरिक्त 18 कैरेट सोने से बना एक लघु रॉकेट मॉडल भी मिशन का हिस्सा रहा। इस स्वर्ण निर्मित कलाकृति में भारत के तीन महान वैज्ञानिकों—नोबेल पुरस्कार विजेता सी.वी. रमन, भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई तथा पूर्व राष्ट्रपति और मिसाइल मैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम—की अत्यंत सूक्ष्म प्रतिमाएं स्थापित की गई थीं। इसे भारतीय वैज्ञानिक विरासत और नवाचार की प्रतीकात्मक श्रद्धांजलि के रूप में अंतरिक्ष में भेजा गया।

विशेषज्ञों का मानना है कि विक्रम-1 की सफलता भारत के निजी अंतरिक्ष उद्योग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगी। वर्ष 2020 में अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी कंपनियों के लिए अवसर खोलने के बाद से देश में कई स्टार्टअप उपग्रह प्रक्षेपण, रॉकेट निर्माण, अंतरिक्ष अनुसंधान और स्पेस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में तेजी से काम कर रहे हैं। स्काईरूट एयरोस्पेस की यह उपलब्धि इस बात का प्रमाण है कि भारतीय निजी उद्योग अब केवल घरेलू आवश्यकताओं तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक वाणिज्यिक लॉन्च बाजार में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छोटे उपग्रहों के प्रक्षेपण की मांग लगातार बढ़ रही है। संचार, पृथ्वी अवलोकन, मौसम पूर्वानुमान, कृषि, रक्षा और इंटरनेट सेवाओं के लिए बड़ी संख्या में छोटे उपग्रह विकसित किए जा रहे हैं। ऐसे में कम लागत, उच्च विश्वसनीयता और त्वरित प्रक्षेपण क्षमता वाले लॉन्च व्हीकल की आवश्यकता बढ़ रही है।

गरवी गुजरात
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2002

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

हाइड्रोजन ट्रेन

देश की पहली हाइड्रोजन ऊर्जा से चलने वाली रेल की शुरुआत ने भारत में साफ-सुथरे और कम प्रदूषण वाले ट्रांसपोर्ट की ओर बदलाव की प्रक्रिया आरंभ कर दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुक्रवार को हरियाणा में हरी झंडी दिखाकर शुरू किया गया यह प्रोजेक्ट- 'मेक इन इंडिया' की सफलता के प्रतीक के तौर पर भी प्रस्तुत किया गया। दूसरे शब्दों में कहें तो यह पूरी दुनिया को संदेश देने का प्रयास ही है कि आज भारत पर्यावरण के अनुकूल परिवहन को प्राथमिकता देने के लिये प्रतिबद्ध है। यानी हम भी इस क्षेत्र के ग्लोबल लीडर्स में शामिल होने के आकांक्षी हैं। निश्चित रूप से हाइड्रोजन फ्यूल सेल से चलने वाली यह 10-कोच वाली ट्रेन, जिसमें सिर्फ पानी की भाप ही निकलती है, डीजल इंजनों का पर्यावरण अनुकूल विकल्प भी है। उल्लेखनीय है कि हरियाणा के जींद में स्वदेशी टेक्नोलॉजी और स्थानीय स्तर पर विकसित हाइड्रोजन इकोसिस्टम के साथ, यह प्रोजेक्ट एडवांस्ड इंजीनियरिंग में देश की बढ़ती क्षमताओं को भी दर्शाता है। वहीं दूसरी ओर यह प्रोजेक्ट देश के 'नेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन' को भी संबल देने वाला है। जिसका उद्देश्य आयातित जीवाश्म ईंधन पर भारत की निर्भरता को कम करना तो है ही, साथ ही दीर्घकाल में देश के नेट-जीरो के लक्ष्यों को पूरा करने में सहयोग बढ़ाना भी है। सही मायने में देश में ग्रीन हाइड्रोजन का रणनीतिक महत्व जलवायु संबंधी चिंताओं से कहीं आगे बढ़कर है। हाल के दिनों में पश्चिम एशिया में लगातार बढ़ते अमेरिका व ईरान के संघर्ष से उपजे विषम हालातों ने ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की जरूरत को एकबार फिर से रेखांकित किया है। ऐसे में आयातित कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस और औद्योगिक फीडस्टॉक पर भारत की भारी निर्भरता के कारण ऊर्जा सुरक्षा आज देश की राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गई है। विशेष रूप से वैश्विक भू-राजनीतिक अस्थिरता के दौर में। आज के वैश्विक अशांति के समय में ऊर्जा सुरक्षा राष्ट्रीय संप्रभुता की संरक्षा के लिए अपरिहार्य शर्त बन गई है।

इसमें दो राय नहीं हो सकती है कि मौजूदा दौर में हमें नवीकरणीय ऊर्जा की उपयोगिता को बढ़ावा देना होगा। इसी क्रम में देश में ही हाइड्रोजन का उत्पादन करने से हमें अस्थिर वैश्विक ऊर्जा बाजार पर निर्भरता कम करने में मदद मिल सकती है। वहीं दूसरी ओर इन सभी प्रयासों से देश की अर्थव्यवस्था को भी संबल मिलेगा। निस्संदेह, हाइड्रोजन ट्रेन को लेकर जो उत्साह देखा जा रहा है, वह स्वाभाविक ही है। लेकिन इससे जुड़ी हकीकत को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए हरित हाइड्रोजन की कीमत अभी भी ग्रे हाइड्रोजन की कीमत से लगभग दोगुनी होती है। इसमें बिजली की अधिक लागत, महंगे इलेक्ट्रोलाइजर और लगातार पॉलिसी सपोर्ट की जरूरत, बड़े पैमाने पर इसके उपयोग को लेकर चुनौतियां पैदा कर सकती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि देश में ब्रॉड-गेज रेलवे नेटवर्क का 95 फीसदी हिस्सा पहले ही बिजली से संचालित हो चुका है। हाल-फिलहाल इस बात की संभावना कम ही है कि हाइड्रोजन से चलने वाली ट्रेन पूरे देश में इलेक्ट्रिक ट्रेनों की जगह ले लेंगी। इसके बजाय, हाइड्रोजन ऊर्जा से संचालित ट्रेनों का ज्यादा लाभ उन रूटों पर हो सकता है, जहां बिजली की लाइन बिछाना आर्थिक या तकनीकी रूप से कठिन होता है। इस दृष्टिकोण से हाइड्रोजन ट्रेन को लंबे समय के समाधान के बजाय एक रणनीतिक प्रदर्शन के तौर पर देखा जाना चाहिए। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि भारत इसकी उत्पादन लागत किस हद तक कम करने में सफल हो पाता है। साथ ही नवीकरणीय ऊर्जा की क्षमता का विस्तार करने तथा व्यावसायिक रूप से कामयाब हाइड्रोजन इकोसिस्टम बनाने में हम किस सीमा तक सफल होते हैं। इसके अलावा हमें कम लागत वाली अन्य नवीकरणीय ऊर्जा के नये स्रोतों को भी तलाशना होगा। जिसके लिये इन विकल्पों की व्यावहारिकता और आर्थिक लागत कम रखना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। हमारे प्रयास हों कि तकनीक व अन्य संसाधनों के मामले में 'मेक इन इंडिया' के लक्ष्यों की प्राथमिकता पर ध्यान दें।

भोजशाला और ज्ञानवापी का नजराना देकर नजीर पेश करे मुस्लिम समाज

"परमार वंश के महान राजा भोज द्वारा वर्ष 1034 में निर्मित यह संस्कृत पाठशाला और वाग्देवी मंदिर भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अनुपम केंद्र था। हाल ही में उच्च न्यायालय के आदेश पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा किए गए वैज्ञानिक सर्वेक्षण ने इस स्थान के मूल स्वरूप को पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है।

दो अंग्रेजी कहावते हैं "The eyes are useless when the mind is blind" अर्थात् आँखें निरर्थक यदि दिमाग ही सत्य को देखने से इनकार कर दे। और दूजी कहावत है, "Flogging a dead horse" अर्थात् मरे हुए घोड़े को चाबुक मार-मारकर उससे उठने की आशा रखना। ये दोनों ही कहावतें वर्तमान समय में 'भारतीय मुस्लिम समाज' पर सटीक बैठती हैं।धार की वाग्देवी (मां सरस्वती) की पावन धरोहर 'भोजशाला' और साथ-साथ काशीनाथ के ज्ञानवापी मंदिर का मामला आज पुनः मुस्लिम समाज से सौहाद्र की आशा लिए खड़ा है।

मुस्लिम समाज और विशेषतः इस समाज के नेतृत्व का दावा करने वाले नेताओं को क्या यह बात समझ नहीं आती है कि - "इस ऐतिहासिक परिसर पर हिंदू समाज का दावा केवल आस्था पर नहीं, बल्कि अकाट्य ऐतिहासिक और वैज्ञानिक प्रमाणों पर आधारित है?"

मुस्लिम समाज के नेता यदि अपनी सियासती स्वार्थों के कारण सही बात नहीं पर पा रहे हैं तो मुल्ला, मौलवी, मुस्लिम स्कालर्स, प्रोफेसर्स, बुद्धिजीवियों को आगे आना चाहिए और भोजशाला व ज्ञानवापी का नजराना थाली में सजाकर हिंदू समाज को सौंपना चाहिए। यदि मुस्लिम नेता और आलिम दोनों ही ऐसा नहीं करते हैं तो फिर बार-बार गंगा जमुनी तहजीब की बात हिंदू और मुस्लिम समाज दोनों को ही बंद कर देनी चाहिए। गंगा-जमुनी तहजीब केवल जुमला नहीं है यह मुस्लिम वर्ग को सिद्ध करने का यह सर्वाधिक सटीक अवसर है।

परमार वंश के महान राजा भोज द्वारा वर्ष 1034 में निर्मित यह संस्कृत पाठशाला और वाग्देवी मंदिर भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अनुपम केंद्र था। हाल ही में उच्च न्यायालय के आदेश पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा किए गए वैज्ञानिक सर्वेक्षण ने इस स्थान के मूल स्वरूप को

पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है।

सर्वेक्षण के दौरान परिसर और उसके मलबे से सनातन धर्म के विभिन्न देवी-देवताओं की खंडित एवं संरक्षित प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। इनमें भगवान गणेश, शिव, विष्णु, ब्रह्मा, माता पार्वती और वाग्देवी (सरस्वती) की अद्भुत कलाकृतियां सम्मिलित हैं। ये मूर्तियां स्पष्ट करती हैं कि यह मूल रूप से एक मंदिर परिसर था। भोजशाला की दीवारों और स्तंभों पर संस्कृत और प्राकृत भाषा में लिखे गए कई शिलालेख मिले हैं। इनमें संस्कृत व्याकरण (पतंजलि के सूत्र), काव्य और राजा भोज की स्तुति अंकित है। मस्जिदों में अरबी या फारसी के शिलालेख होते हैं, परंतु यहाँ देवनागरी लिपि में खुदे वैदिक मंत्र और व्याकरण के नियम इस स्थान के अकाट्य 'सरस्वती कंठाभरण' (विद्या का मंदिर) होने की पुष्टि करते हैं।

परिसर के स्तंभों, बीम और छतों पर नक्काशीदार कमल, स्वस्तिक, कलश, शंख, कीर्तिमुख और अप्सराओं की आकृतियां उकेरी गई हैं। इस्लामी वास्तुकला में जीवंत आकृतियों का अंकन पूर्णतः वर्जित है, जबकि भोजशाला के कोने-कोने में ये कलाकृतियां बिखरी पड़ी हैं, जो इसके मंदिर होने का जीवंत प्रमाण हैं।

वैज्ञानिक जांच में परिसर के भीतर प्राचीन हवन कुंड और गर्भगृह के स्पष्ट अवशेष मिले हैं। वर्तमान में जो ढांचा मस्जिद के रूप में उपयोग किया जा रहा है, वह वास्तव में मंदिर के ही स्तंभों और सामग्री को उलट-पुलट कर तथा उन्हें क्षतिग्रस्त करके खड़ा किया गया है।

ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार, इस मंदिर की मूल अधिष्ठात्री देवी 'वाग्देवी' की प्रतिमा को ब्रिटिश काल में यहाँ से हटाकर लंदन के 'ब्रिटिश म्यूजियम' में रख दिया गया था, जिसके आधार पर भी हिंदू समाज का यह दावा वैश्विक स्तर पर सिद्ध होता है।

इन तमाम वैज्ञानिक और पुरातात्विक तथ्यों के प्रकाश में यह स्पष्ट है कि धार की भोजशाला पर हिंदू समाज का अधिकार पूरी तरह स्वाभाविक, ऐतिहासिक और न्यायसंगत है। ऐसे में, इस सत्य को नकारकर अदालतों में अपील दर अपील करना केवल समय की बर्बादी और समाज में कटुता बढ़ाने का माध्यम ही बनेगा।

काशी की 'ज्ञानवापी' और धार की 'भोजशाला' दोनों ही स्थानों पर प्रत्यक्ष दिखने वाले पुरातात्विक साक्ष्य चिल्ला-चिल्लाकर सच्चाई बयां कर रहे हैं। सत्य को केवल कानूनी दांव-पेंचों से कुछ समय के लिए टाला जा सकता है, मिटाया नहीं जा सकता। न्यायालय भी अंततः साक्ष्यों और जनभावनाओं के संतुलन पर ही निर्णय देता है। ऐसे में फिर से सुप्रीम कोर्ट की शरण में जाना "अपनी ही कुल्हाड़ी पर पैर मारने" जैसा है।

मुस्लिम समाज के नेताओं, मुल्ला-मौलवियों, बुद्धिजीवियों यह विचार करना ही चाहिए कि ऐसी हठधर्मिता भला किस काम की? वो क्यों अयोध्या जैसी ज़िद किए रहना चाहते हैं? हठधर्मिता का अंत हमेशा कड़वाहट के साथ होता है, जबकि संवाद का अंत सदैव सम्मान के साथ होता है। भारतीय मुसलमानों को यह ऐतिहासिक सत्य स्वीकार करना होगा कि उनके पुरखों के जींस और रक्त इस देश की मिट्टी से जुड़े है, किसी विदेशी आक्रांता बाबर या औरंगजेब से नहीं। वे इसी भूमि की संतान हैं। बहुसंख्यक हिंदू समाज ने सदियों तक अपने मानबिंदुओं के विध्वंस को मूक दर्शक बनकर झेला है, और अब स्वतंत्रता के बाद वह अपनी सांस्कृतिक पहचान को पुनः स्थापित करने के लिए आतुर है। ऐसी परिस्थिति में मुस्लिम समाज को कानूनी लड़ाई लड़ने के बजाय एक बड़ा दिल दिखाना चाहिए। हिंदू समाज को 'बड़ा भाई' मानते हुए उन्हें आगे बढ़कर यह कहना चाहिएः "ये स्थान आपकी आस्था के केंद्र हैं, हम स्वेच्छा से इन पर अपना दावा छोड़ते हैं।"

यह कदम मुस्लिम समाज की कमजोरी नहीं, बल्कि उनके बड़प्पन, सहिष्णुता और कथित 'गंगा-जमुनी तहजीब' का जीवंत उदाहरण बनेगा। जब बड़ा भाई अपने मानबिंदुओं को वापस पाने के लिए संघर्षरत हो, तो छोटे भाई का धर्म अड़चन बनना नहीं, बल्कि ससम्मान मार्ग प्रशस्त करना होता है।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि देश का आम मुसलमान झगड़ा नहीं चाहता। वह अमन, शिक्षा और तरक्की की राह पर चलना चाहता है। परंतु समस्या मुस्लिम समाज के भीतर के उन कट्टरपंथी नेताओं और वोट बैंक की राजनीति करने वाले स्वार्थी तत्वों की है, जो अपनी राजनीतिक दुकानें चमकाने के लिए आम मुसलमानों के मन में अकारण भय पैदा करते हैं। वे यह झूठा डर फैलाते हैं कि "यदि आज एक मस्जिद छोड़ी, तो कल सारी मस्जिदें छीन ली जाएंगी।"

मुस्लिम समाज की सबसे बड़ी त्रासदी यह रही है कि वह इन चंद सियासी ठेकेदारों के हाथों की कठपुतली बन जाता है। इस समाज को अब आत्ममंथन करना होगा। उन्हें अपनी कमान अड़ियल रुख वाले नेताओं के हाथ से छीनकर प्रगतिशील, शिक्षित और उदारवादी चेहरों को सौंपनी होगी, जो देश की मुख्यधारा के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में विश्वास रखते हों।

उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के फैसले कानून की सीमाओं में बंधे होते हैं, लेकिन दिलों को जोड़ने का काम अदालतें नहीं कर सकतीं। धार और काशी के मामलों में यदि मुस्लिम समाज सुप्रीम कोर्ट न जाकर सीधे हिंदू समाज के संतों और प्रतिनिधियों के साथ बैठकर सौहार्दपूर्ण समझौता कर ले, तो यह पूरे विश्व के समक्ष भारतीय संस्कृति की एक अनुपम मिसाल होगी।

यह अवसर इतिहास को बदलने का है। भारतीय मुस्लिम समाज को कड़वाहट की अपनी पुरानी विरासत को यहीं दफन करना चाहिए। उसे धार व काशी में चीख-चीख कर हिंदू मंदिर होने की घोषणा करते वैज्ञानिक व पुरातात्विक साक्ष्यों को ह्रदय से स्वीकार कर हिंदू समाज को सम्मानपूर्वक एक नजराना देकर एक नजीर पेश करनी चाहिए।

प्रेरणा

क्रोध की आग नहीं, क्षमा की रोशनी जीवन का सबसे बड़ा प्रकाश

मनुष्य के जीवन में अनेक भाव आते हैं—प्रेम, करुणा, दया, उत्साह, भय, आशा और क्रोध। इनमें सबसे अधिक विनाशकारी यदि कोई भावना है, तो वह क्रोध है। क्रोध क्षण भर के लिए मनुष्य को शक्ति का भ्रम अवश्य देता है, लेकिन वास्तव में वह उसकी विवेक-शक्ति को छीन लेता है। जिस प्रकार एक छोटी-सी चिंगारी पूरे वन को भस्म कर सकती है, उसी प्रकार एक क्षण का अनियंत्रित क्रोध वर्षों से बने रिश्तों, विश्वास और सम्मान को नष्ट कर सकता है। इतिहास से लेकर वर्तमान तक अनगिनत उदाहरण इस सत्य की पुष्टि करते हैं कि क्रोध कभी किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं बनता, बल्कि नई समस्याओं को जन्म देता है। वहीं क्षमा, धैर्य और प्रेम ऐसे गुण हैं जो सबसे कठिन परिस्थितियों को भी सरल बना देते हैं।

प्राचीन यूनान के महान दार्शनिक सुकरात केवल अपने ज्ञान के कारण ही नहीं, बल्कि अपने व्यवहार और जीवन-दर्शन के कारण भी विश्वभर में आदर के पात्र माने जाते हैं। वे मानते थे कि मनुष्य की सबसे बड़ी विजय किसी दूसरे पर नहीं, बल्कि अपने भीतर उठने वाले क्रोध, अहंकार और लालच पर विजय प्राप्त करना है। उनके आश्रम में अनेक विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने आते थे, लेकिन वे केवल पुस्तकीय शिक्षा नहीं देते थे। वे जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से ऐसी शिक्षा देते थे, जो शिष्यों के मन में हमेशा के लिए बस जाती थी।

एक दिन की बात है। एथेंस की एक शांत गली में सुकरात अपने कुछ शिष्यों के साथ बैठे जीवन, सत्य और आत्मसंयम पर चर्चा कर रहे थे। वातावरण शांत था। तभी तेज कदमों से चलता हुआ एक युवक वहां पहुंचा। उसके चेहरे पर क्रोध साफ दिखाई दे रहा था। उसकी आंखें लाल थीं, सांसें तेज चल रही थीं और आवाज में आक्रोश भरा हुआ था। आते ही उसने कहा, "गुरुदेव! मेरे मित्र ने सब लोगों के सामने मेरा अपमान किया है। उसने मेरी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाई है। मैं उसे कभी क्षमा नहीं करूंगा। मैं उसे ऐसा उत्तर दूंगा कि वह जीवनभर याद रखे।"

युवक को लगा कि सुकरात उसके पक्ष में बोलेंगे और उसके क्रोध को उचित ठहराएंगे। लेकिन सुकरात शांत रहे। उन्होंने बिना कुछ कहे अपने पास रखा एक जलता हुआ दीपक उठाया और युवक के हाथ में देते हुए बोले, "इसे संभालो और मेरे साथ चलो।"

युवक कुछ समझ नहीं पाया, लेकिन गुरु की आज्ञा मानकर उनके पीछे चल पड़ा। सुकरात उसे शहर की भीड़ से दूर एक पुराने रास्ते पर ले गए। कुछ दूरी पर एक छोटी-सी जर्जर झोपड़ी थी। चारों ओर अंधेरा था। झोपड़ी के भीतर प्रवेश करने पर युवक ने एक ऐसा दृश्य देखा जिसने उसके मन को झकझोर दिया।

एक वृद्धा अपने बीमार पुत्र के सिर पर हाथ फेर रही थी। घर में न पर्याप्त भोजन था, न अच्छे वस्त्र, न दवा की व्यवस्था। फिर भी वृद्धा के चेहरे पर शिकायत नहीं थी। उसकी आंखों में ममता थी, उसके शब्दों में स्नेह था और उसके व्यवहार में अद्भुत धैर्य था।

सुकरात ने वृद्धा से पूछा, "माता, तुम्हारे जीवन में इतनी कठिनाइयां हैं। गरीबी है, बीमारी है, अभाव है। क्या तुम्हें कभी अपने भाग्य पर क्रोध नहीं आता?"

वृद्धा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "यदि मैं क्रोध करूं, तो क्या मेरे बेटे का दर्द कम हो जाएगा? क्या मेरे घर में अन्न आ जाएगा? क्या मेरी परेशानियां समाप्त हो जाएंगी? मेरे पास जो थोड़ा-सा प्रेम बचा है, यदि उसे भी क्रोध में जला दूं, तो मेरे बेटे को सहारा कौन देगा? इसलिए मैंने क्रोध को अपने घर में प्रवेश ही नहीं करने दिया।"

उसके ये सरल शब्द किसी बड़े ग्रंथ की शिक्षा से कम नहीं थे। युवक स्तब्ध होकर उसे देखता रह गया। उसे पहली बार महसूस हुआ कि जिसके पास दुखों का पहाड़ है, वह भी शांत रह सकता है, तो फिर वह केवल अपमान की एक घटना को लेकर इतना विचलित क्यों हो गया?

तभी सुकरात ने युवक के हाथ में रखे दीपक की ओर संकेत करते हुए कहा, "इस दीपक की लौ को देखो। जब तुम इसे किसी दूसरे को जलाने के लिए आगे बढ़ाते हो, तब सबसे पहले इसकी गर्मी तुम्हारे अपने हाथ को ही झुलसाती है। क्रोध भी ठीक ऐसा ही होता है। तुम सोचते हो कि इससे दूसरे को पीड़ा दोगे, लेकिन सबसे पहले यह तुम्हारे मन की शांति, तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारे स्वास्थ्य को नष्ट करता है।"

ये शब्द सुनते ही युवक की आंखें नम हो गईं। उसे अपने मित्र का अपमान याद नहीं रहा। उसे केवल अपनी मां का चेहरा याद आया, जिसने बचपन से लेकर आज तक उसकी हर गलती को क्षमा किया था। यदि उसकी मां हर छोटी-बड़ी भूल पर क्रोध करती, तो शायद वह आज इतना आत्मविश्वासी और संवेदनशील नहीं बन पाता।

उसने उसी क्षण निश्चय किया कि वह अपने मित्र से बदला लेने नहीं जाएगा, बल्कि उससे शांतिपूर्वक बात करेगा। यदि गलती उसकी होगी तो उसे स्वीकार करेगा और यदि मित्र की होगी तो उसे क्षमा कर देगा। उस दिन युवक ने समझ लिया कि सच्चा साहस प्रतिशोध लेने में नहीं, बल्कि अपने भीतर उठते क्रोध पर विजय पाने में है।

आज का समाज भी इसी शिक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता महसूस करता है। छोटी-छोटी बातों पर रिश्ते टूट जाते हैं। परिवारों में वर्षों तक लोग एक-दूसरे से बात नहीं करते। सड़क पर मामूली विवाद हिंसा में बदल जाता है। सोशल मीडिया पर एक टिप्पणी लोगों को इतना उत्तेजित कर देती है कि वे अपशब्दों और घृणा की भाषा बोलने लगते हैं। इसका कारण केवल इतना है कि हमने अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना कम कर दिया है।

आधुनिक मनोविज्ञान भी बताता है कि लगातार क्रोध करने वाला व्यक्ति मानसिक तनाव, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अनिद्रा और अवसाद जैसी समस्याओं का अधिक शिकार होता है। क्रोध शरीर में ऐसे रसायन उत्पन्न करता है जो धीरे-धीरे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं। इसके विपरीत क्षमा करने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से अधिक शांत, संतुलित और प्रसन्न रहता है। क्षमा का अर्थ कमजोरी नहीं है, बल्कि यह आत्मबल और आत्मविश्वास की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

भारतीय संस्कृति भी सदियों से यही संदेश देती आई है कि क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है कि क्रोध से मोह उत्पन्न होता है, मोह से स्मृति भ्रमित होती है और स्मृति नष्ट होने पर बुद्धि का विनाश हो जाता है। जब बुद्धि नष्ट हो जाती है, तब मनुष्य स्वयं अपने पतन का कारण बन जाता है। इसलिए संत, महापुरुष और ऋषि-मुनि सदैव धैर्य, संयम और क्षमा को जीवन का आधार बनाने की प्रेरणा देते रहे हैं।

जीवन में अपमान, असफलता, आलोचना और कठिनाइयां हर व्यक्ति के हिस्से में आती हैं। उनसे बचना संभव नहीं है, लेकिन उनके प्रति हमारी प्रतिक्रिया कैसी होगी, यह पूरी तरह हमारे हाथ में है। यदि हम हर चोट का उत्तर क्रोध से देंगे, तो भीतर की शांति खो देंगे। यदि हम धैर्य और विवेक से काम लेंगे, तो वही परिस्थितियां हमें अधिक परिपक्व और मजबूत बना देंगी।

गौरवपूर्ण लोकतांत्रिक मूल्यों का साझा करने का अवसर

राजस्थान विधानसभा के 75 साल पर अमृत महोत्सव का आयोजन इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि दुनिया में हमारे देष की लोकतंत्र की जड़े सबसे गहरी होने के साथ ही आज भी लोकतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से भारत दुनिया के देषों के सामने एक मिसाल है। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल से जिस तरह से 15 जुलाई, 2026 को आयोजित अमृत महोत्सव के कार्यक्रम में विधानसभा के नए पुराने सदस्यों को एक साझा मंच उपलब्ध कराने और एक दूसरे के अनुभवों को साझा करने का बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराया है वहीं उच्च सदन के सभापति उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम में उद्घाटन सत्र और समापन सत्र में सहभागी बनाकर कार्यक्रम को और अधिक गरिमामय बनाया है। अमृत महोत्सव में राजस्थान विधानसभा के 410 नए पुराने सदस्यों ने हिस्सा लिया वहीं 6 बार या इससे अधिक समय तक सदस्य रहे सम्माननीयों का सम्मान कर लोकतांत्रिक मूल्यों का ही स्वागत सम्मान किया गया है। आज जिस तरह से विधायिका की कम बैठकों, सत्रों के दौरान हंगामें के हालात और मतभेद और मनभेद के हालातों में राजस्थान विधानसभा का अमृत महोत्सव केवल एक आयोजन ना होकर नए विधायकों के लिए प्रेरणास्पद भी हो गया है। अमृत महोत्सव के दौरान राजस्थान में सामाजिक राजनीतिक परिवर्तनकारी 24 कानूनों पर चर्चा भी की गई तो नए पुराने सदस्यों के अनुभवों को साझा करने का भी बेहतरीन अवसर प्राप्त हो सका है। कार्यक्रम के दौरान उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन का रिमार्केवल प्रतिक्रिया दी कि चुनाव भले ही वोट के आधार पर जीते जाते हैं पर जनता का दिल तो लोकहितकारी कार्य करके ही जीता जा सकता है। संवैधानिक संस्थाओं की शक्ति गरिमा बनाये रखने में हैं वहीं बहस की गुणवत्ता, गंभीरता और सदन में आचरण की मर्यादा से ही संवैधानिक संस्थाएं मजबूत होती है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला राजस्थान विधानसभा के भी सदस्य रह चुके हैं और उनका मानना रहा कि विधानसभा उनके लिए संस्कारों की पाठशाला रही है। पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कहा कि दुश्मनी जमकर करों पर खिड़की भी खुली रखों। इंसानियत राजनीति की लक्ष्मण रेखा से बड़ी होनी चाहिए। उन्होंने स्व. भैरोसिंह शेखावत और स्व. मोहन लाल सुखाड़िया व स्व. भैरोसिंह शेखावत व स्व. हरिदेव जोशी के बीच सदन और सदन के बाहर के संबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि संबंधों की लक्ष्मण रेखा को नहीं लांघा जाना चाहिए। मतभेद भले ही हो पर मनभेद नहीं होना चाहिए। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल पर आयोजित अमृत महोत्सव में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली सहित पक्ष विपक्ष के नेताओं ने खुलकर विचार रखते हुए विधायिका की कम बैठकों पर गंभीर चिंता व्यक्त की।

राजस्थान विधानसभा का अमृत महोत्सव इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि सामान्यतः इस तरह के कार्यक्रम मात्र औपचारिकता बन कर रह जाते हैं पर जिस तरह से अमृत महोत्सव को लोकतंत्र के लिए उपादेय, लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनर्स्थापना, सत्र के दौरान बहस के स्तर की गंभीरता, दलगत राजनीति से उठकर साझा मंच पर खुली चर्चा और अनुभवों का साझा करने से यह आयोजन विशिष्ठ आयोजन हो जाता है। जिस तरह से सत्रों के दौरान हंगामें के हालात बनते हैं और आपसी मतभेद और मनभेद की स्थितियां होने लगी है इस पर चिंता व्यक्त करने के साथ ही विधानसभा के पहले के सत्रों में गंभीरता, तथ्यात्मकता, गहन अध्ययन और स्तरीय बहसों के उदाहरण उदृत करते हुए गंभीर और स्तरीय बहस पर जोर दिया गया। यहां तक कहा गया कि हंगामें से नहीं तथ्य और तर्क व संवाद से बड़े नेता बनते हैं। लोकतंत्र की लक्ष्मण रेखा से इंसानियत की भावना पर जोर दिया गया। अमृत महोत्सव के बहाने जिस तरह से सदनों में बहस के दौरान पक्ष-विपक्ष के सदस्यों द्वारा गरिमापूर्ण, गंभीरता परक, गहन अध्ययन, आलोचना के लिए आलोचना ना होने, तथ्यपरक पक्ष रखने और गंभीर बहस से सदन की गरिमा ही बढ़ेगी और इसका लाभ लोकतांत्रिक मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ करने में मिल सकेगा। अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का यह कहना कि अनुभव और युवा उर्जा का समागम ही लोकतंत्र की असली पूंजी है। देखा जाए तो राजस्थान विधानसभा के अमृत उत्सव का यह आयोजन जहां लोकतंत्र की मजबूती, लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ ही लोकतंत्र में अटूट आस्था, गौरवशाली लोकतांत्रिक आस्था का माध्यम बन गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का यह निकश की यह आयोजन अतीत का उत्सव ही नहीं अपितु भविष्य का पथ-प्रदर्शक भी है। राजस्थान विधानसभा के इस अमृत महोत्सव पर जिस तरह से सत्रों के दौरान बहस को स्तरीय बनाने, हंगामें की भेंट नहीं चढ़ाने, गहन अध्ययन और तर्क आधारित बहस और पूरी तैयारी के साथ सदन में हिस्सा लेने पर जिस तरह का एक स्वर में संदेश दिया गया है और जिस तरह से विचारधारा और प्रतिवद्धता भिन्न होने के बावजूद मानवीय संबंधों को बनाये रखने यानी की मतभेद के बावजूद मनभेद नहीं रखने का गंभीर व संदेश दिया गया है। अमृत महोत्सव में अभी चार कार्यक्रम और होने है और कार्यक्रमों पर आमजन की निगाहें इस मायने में हैं कि सदन की गरिमा और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ ही आमनागरिकों केन्द्र में होना चाहिए। आयोजन के लिए साधुवाद इस अर्थ में महत्वपूर्ण हो जाता है कि नए सदस्यों को गरिमापूर्ण इतिहास से रुबरु होने के साथ ही वरिष्ठों के अनुभवों को भी साझा और आत्मसात करने का अवसर मिल रहा है। सही मायने में विधायी परंपरा को समझने, संसदीय मर्यादाओं, लोकतांत्रिक मूल्यों पर अनुभवों को साझा करने का अवसर मिला है।

अभियान

महाप्रभु की मौसी का अनोखा रहस्य

भारत की सनातन संस्कृति में अनेक ऐसे पर्व और परंपराएँ हैं, जिनके पीछे केवल धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि गहरे आध्यात्मिक संदेश, मानवीय मूल्य और पारिवारिक संबंधों की मधुरता भी छिपी हुई है। इन्हीं दिव्य परंपराओं में सबसे प्रमुख और विश्वविख्यात है ओडिशा के पुरी में आयोजित होने वाली श्री जगन्नाथ रथ यात्रा। यह केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं की भावनाओं, विश्वास और भक्ति का ऐसा महासागर है, जिसमें हर वर्ष लाखों लोग आस्था की डुबकी लगाने के लिए देश-विदेश से पुरी पहुँचते हैं। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि से आरंभ होने वाली यह यात्रा भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई भगवान बलभद्र और बहन देवी सुभद्रा के श्रीमंदिर से निकलकर गुंडिचा मंदिर तक जाने की दिव्य परंपरा का प्रतीक है। लेकिन इस यात्रा का सबसे रोचक और भावनात्मक पक्ष यह है कि इसे भगवान जगन्नाथ का अपनी मौसी के घर जाना माना जाता है। यह प्रश्न हर श्रद्धालु के मन में उठता है कि आखिर भगवान जगन्नाथ की मौसी कौन हैं? वे कहाँ रहती हैं? और ऐसा क्या कारण है कि स्वयं जगत के नाथ हर वर्ष उनके घर जाने की परंपरा निभाते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर हमें पुराणों, लोकमान्यताओं और ओडिशा की प्राचीन धार्मिक परंपराओं में मिलते हैं।

भगवान जगन्नाथ का स्वरूप स्वयं में अत्यंत अद्भुत और रहस्यमय माना जाता है। वे केवल भगवान विष्णु या श्रीकृष्ण के रूप में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण सृष्टि के पालनकर्ता और सभी जाति, वर्ग, भाषा तथा समुदाय के लोगों के आराध्य देव माने जाते हैं। उनकी रथ यात्रा भी इसी सार्वभौमिक भावना का प्रतीक है। जहाँ सामान्यतः भगवान मंदिर के गर्भगृह में विराजमान रहते हैं, वहीं वर्ष में एक बार वे स्वयं अपने भक्तों के बीच आते हैं। यह संदेश देता है कि ईश्वर किसी एक स्थान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे हर उस हृदय में निवास करते हैं जहाँ श्रद्धा, प्रेम और सेवा का भाव होता है।

भगवान जगन्नाथ की मौसी के विषय में सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध मान्यता रानी गुंडिचा से जुड़ी हुई है। पुराणों के अनुसार मालवा के पराक्रमी और धर्मनिष्ठ राजा इंद्रद्युम्न भगवान विष्णु के परम भक्त थे। उन्होंने संकल्प लिया कि वे पृथ्वी पर ऐसा मंदिर बनवाएँगे, जहाँ स्वयं भगवान जगन्नाथ विराजमान होंगे और समस्त मानव जाति उनकी पूजा कर सकेगी। अनेक वर्षों के अथक प्रयास के बाद उन्होंने वर्तमान पुरी में भव्य मंदिर का निर्माण कराया। मंदिर तैयार हो गया, लेकिन अब सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि भगवान की प्रतिमाओं में प्राण-प्रतिष्ठा कौन करेगा।

देवर्षि नारद ने राजा इंद्रद्युम्न को सलाह दी कि इस महान कार्य के लिए स्वयं सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी को आमंत्रित किया जाए। राजा बिना देर किए ब्रह्मलोक के लिए प्रस्थान कर गए। किंतु ब्रह्मलोक और पृथ्वी के समय में अत्यधिक अंतर होता है। जहाँ ब्रह्मलोक में कुछ समय बीता, वहीं पृथ्वी पर कई वर्षों का समय गुजर गया। राजा की अनुपस्थिति में राज्य की सारी जिम्मेदारी उनकी धर्मपत्नी रानी गुंडिचा ने संभाली। उन्होंने न केवल राज्य की रक्षा की, बल्कि भगवान के मंदिर की सेवा, पूजा और संरक्षण का कार्य भी निरंतर जारी रखा। उन्होंने कठिन तपस्या की और अपने पति के सकुशल लौटने की प्रतीक्षा करती रहीं।

जब राजा इंद्रद्युम्न ब्रह्माजी के साथ वापस लौटे, तब तक पृथ्वी पर बहुत समय बीत चुका था। मंदिर समुद्र की रेत और प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण लगभग दब चुका था। राजा ने अथक प्रयासों से मंदिर को पुनः खोजा और ब्रह्माजी ने भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा की प्रतिमाओं की विधिवत प्राण-प्रतिष्ठा संपन्न कराई। इस अवसर पर भगवान जगन्नाथ रानी गुंडिचा की भक्ति, धैर्य, तपस्या और त्याग से अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने रानी को माँ के समान सम्मान देते हुए उन्हें अपनी मौसी का स्थान प्रदान किया और यह वचन दिया कि वे प्रत्येक वर्ष उनके निवास पर अवश्य आएँगे। तभी से गुंडिचा मंदिर को भगवान की मौसी का घर माना जाने लगा और रथ यात्रा की यह परंपरा सदियों से चली आ रही है।

रथ यात्रा के दौरान भगवान जगन्नाथ अपने भाई-बहन के साथ गुंडिचा मंदिर में लगभग नौ दिनों तक निवास करते हैं। इस अवधि को अत्यंत शुभ माना जाता है। लाखों श्रद्धालु इस दौरान भगवान के दर्शन करने पहुँचते हैं। ऐसी मान्यता है कि इन दिनों भगवान अपने भक्तों को अत्यंत सहज रूप में दर्शन देते हैं और उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। गुंडिचा मंदिर को कई विद्वान भगवान के ननिहाल अथवा जन्मस्थली का प्रतीक भी मानते हैं। इस कारण इस यात्रा का महत्व और भी बढ़ जाता है। भगवान जगन्नाथ की मौसी से जुड़ी दूसरी अत्यंत प्रसिद्ध मान्यता पुरी के मौसी माँ मंदिर और वहाँ विराजमान देवी अर्धशोषणी, जिन्हें अर्धासिनी भी कहा जाता है, से संबंधित है। यह मंदिर श्रीमंदिर और गुंडिचा मंदिर के बीच स्थित है। रथ यात्रा के दौरान भगवान जगन्नाथ का रथ यहाँ कुछ समय के लिए अवश्य रुकता है। यह केवल यात्रा का विश्राम स्थल नहीं, बल्कि एक अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक पड़ाव माना जाता है। स्कंद पुराण में वर्णित कथा के अनुसार एक समय समुद्र का जलस्तर इतना अधिक बढ़ गया कि पुरी नगरी और श्रीजगन्नाथ मंदिर पर संकट आ गया। समुद्र का पानी मंदिर तक पहुँचने लगा और ऐसा प्रतीत होने लगा कि यदि जलस्तर नहीं रुका तो संपूर्ण क्षेत्र जलमग्न हो जाएगा। उसी समय देवी अर्धशोषणी ने अपने दिव्य स्वरूप में प्रकट होकर समुद्र का आधा जल स्वयं पी लिया। उनके इस अद्भुत कार्य से जलस्तर कम हो गया और श्रीमंदिर सुरक्षित बच गया। भगवान जगन्नाथ ने देवी के इस महान उपकार को सदा स्मरण रखने का संकल्प लिया। तभी से देवी अर्धशोषणी को पुरी की रक्षा देवी तथा भगवान जगन्नाथ की मौसी के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ। आज भी जब रथ यात्रा निकलती है, तो भगवान का रथ मौसी माँ मंदिर पर रुकता है। यहाँ विशेष पूजा की जाती है और भगवान को उनका प्रिय भोग अर्पित किया जाता है। यह दृश्य देखने के लिए हजारों श्रद्धालु मार्ग के दोनों ओर घंटों प्रतीक्षा करते हैं।

इस यात्रा का सबसे मधुर और लोकप्रिय प्रसंग पोड़ा पीठा से जुड़ा हुआ है। पोड़ा पीठा ओडिशा का एक पारंपरिक व्यंजन है, जिसे चावल, उड़द की दाल, नारियल, गुड़, इलायची और घी जैसी सामग्री से तैयार किया जाता है। इसे धीमी आँच पर लंबे समय तक पकाया जाता है, जिससे इसका स्वाद अत्यंत विशिष्ट हो जाता है। लोकमान्यता है कि यह भगवान जगन्नाथ का अत्यंत प्रिय भोजन है।

एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार एक बार माता लक्ष्मी किसी कारणवश भगवान जगन्नाथ से रुष्ट होकर श्रीमंदिर छोड़कर चली गईं। माता लक्ष्मी धन, अन्न और समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी हैं। उनके चले जाने से मंदिर में अन्न का अभाव उत्पन्न हो गया। भगवान जगन्नाथ और भगवान बलभद्र को भोजन के लिए भिक्षा तक माँगनी पड़ी। इस कठिन समय में देवी सुभद्रा अपनी मौसी अर्धशोषणी के पास रहने लगीं। मौसी ने तीनों भाई-बहनों का स्नेहपूर्वक पालन किया और भगवान जगन्नाथ को अपने हाथों से पोड़ा पीठा बनाकर खिलाया। भगवान को यह व्यंजन इतना प्रिय लगा कि उन्होंने हर वर्ष अपनी मौसी के यहाँ इसे ग्रहण करने की परंपरा बना दी। आज भी रथ यात्रा के दौरान मौसी माँ मंदिर में भगवान को पोड़ा पीठा का भोग लगाया जाता है और इसे अत्यंत शुभ माना जाता है।

रथ यात्रा का आध्यात्मिक महत्व भी अत्यंत गहरा है। सामान्य दिनों में भगवान श्रीमंदिर के गर्भगृह में विराजमान रहते हैं, जहाँ प्रवेश के कुछ धार्मिक नियम हैं। किंतु रथ यात्रा के समय भगवान स्वयं बाहर निकलकर अपने सभी भक्तों को दर्शन देते हैं। उस समय कोई ऊँच-नीच, जाति-पांति या सामाजिक भेदभाव नहीं रह जाता। भगवान के रथ की रस्सी खींचने का अधिकार सभी को समान रूप से प्राप्त होता है। यही कारण है कि जगन्नाथ संस्कृति को समानता, समरसता और मानवता की संस्कृति कहा जाता है।

भगवान जगन्नाथ के तीनों रथ भी अपने-अपने आध्यात्मिक महत्व रखते हैं। भगवान जगन्नाथ का रथ नंदीघोष, भगवान बलभद्र का रथ तालध्वज और देवी सुभद्रा का रथ दर्पदलन कहलाता है। प्रत्येक वर्ष इन रथों का निर्माण नए सिरे से विशेष प्रकार की लकड़ी से किया जाता है। यह परंपरा भी सैकड़ों वर्षों से बिना किसी परिवर्तन के चली आ रही है। हजारों कारीगर महीनों तक परिश्रम करके इन विशाल रथों का निर्माण करते हैं। यह कार्य केवल शिल्प नहीं, बल्कि भगवान की सेवा माना जाता है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

देश का सबसे भरोसेमंद निवेश गंतव्य बना गुजरात, नीति आयोग के 'इन्वेस्टमेंट फ्रेंडलीनेस इंडेक्स 2026' में नंबर-1

- 56.6 के सर्वोच्च स्कोर के साथ गुजरात देश में पहले स्थान पर, महाराष्ट्र (53.7) और तमिलनाडु (53.3) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर
- उद्योग-अनुकूल नीतियां, iNDEXTb की सिंगल-विंडो व्यवस्था और प्लग-एंड-प्ले औद्योगिक इकोसिस्टम ने गुजरात को बनाया निवेशकों की पहली पसंद
- औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए बिजली राष्ट्रीय औसत से लगभग 29% सस्ती, औसतन 23.8 घंटे प्रतिदिन बिजली आपूर्ति
- भारत के कुल मर्चेंडाइज निर्यात में 31% हिस्सेदारी, प्रति व्यक्ति GSDP 2.64 लाख; राजकोषीय घाटा केवल 2.81% और कुल देनदारियां बड़े राज्यों के औसत से लगभग 40% कम

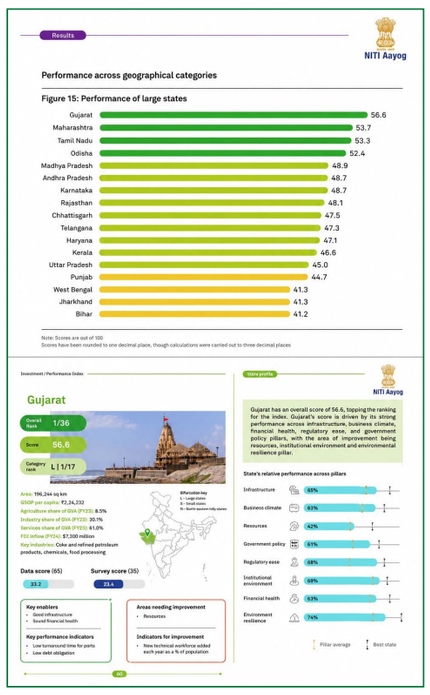

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत @2047' के विजन को साकार करने की दिशा में गुजरात ने निवेश और औद्योगिक विकास के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है। नीति आयोग द्वारा जारी देश के पहले 'इन्वेस्टमेंट फ्रेंडलीनेस इंडेक्स 2026' में गुजरात ने 56.6 के सर्वोच्च स्कोर के साथ बड़े राज्यों की श्रेणी में पहला स्थान प्राप्त किया है। 17 प्रमुख राज्यों के मूल्यांकन में गुजरात ने महाराष्ट्र (53.7) और तमिलनाडु (53.3) को पीछे छोड़ते हुए देश के सबसे निवेश-अनुकूल राज्य के रूप में अपनी स्थिति और मजबूत की है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार की उद्योग-अनुकूल नीतियों, प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था और निवेश समर्थक सुधारों को इस राष्ट्रीय रैंकिंग के माध्यम से महत्वपूर्ण मान्यता मिली है। नीति आयोग का यह सूचकांक 84 संकेतकों और 8 प्रमुख पिलर्स के आधार पर राज्यों का मूल्यांकन करता है।

iNDEXTb की सिंगल-विंडो व्यवस्था, आसान NOC और स्थिर श्रम माहौल ने जीता निवेशकों का भरोसा

रिपोर्ट में गुजरात की नीतिगत स्थिरता और निवेशकों के लिए सहज कारोबारी माहौल को राज्य की प्रमुख ताकतों में शामिल किया गया है। राज्य का iNDEXTb (Industrial Extension Bureau) निवेशकों को सिंगल-विंडो क्लीयरेंस के साथ एंड-टू-एंड सहायता उपलब्ध कराता है, जिससे निवेश प्रक्रिया तेज, पारदर्शी और सरल बनी है। इसके अतिरिक्त, व्यवसायों के लिए उचित लागत और समय पर NOC (अनापत्ति प्रमाण पत्र) प्राप्त करने की एक अत्यंत सुव्यवस्थित और पारदर्शी प्रक्रिया है, जो 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' को बढ़ावा देती है।

रिपोर्ट में यह भी रेखांकित किया गया है कि सरकार द्वारा अनिवार्य सेवाओं पर हड़ताल पर प्रतिबंध के कारण राज्य में 'लेबर डिसरप्शन' (श्रम व्यवधान) का प्रभाव न के बराबर है। यह व्यवसायों को एक बेहद सुरक्षित और स्थिर लेबर माहौल प्रदान करता है।

विश्वस्तरीय औद्योगिक इंफ्रास्ट्रक्चर, प्लग-एंड-प्ले इकोसिस्टम और 'वाइब्रेंट गुजरात' से बढ़ा निवेश आकर्षण

रिपोर्ट के अनुसार, गुजरात का मजबूत औद्योगिक इंफ्रास्ट्रक्चर निवेशकों के भरोसे का प्रमुख आधार है। धोलेरा SIR, GIFT City, साणंद, दाहेज, झगड़िया और सायखा जैसे आधुनिक औद्योगिक क्लस्टर्स निवेशकों को विश्वस्तरीय प्लग-एंड-प्ले सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं, जिससे उद्योगों की स्थापना और संचालन अधिक तेज एवं सुविधाजनक हुआ है। इसी मजबूत इकोसिस्टम के बल पर राज्य का द्विवार्षिक 'वाइब्रेंट गुजरात समिट' घरेलू और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों से भारी निवेश प्रतिबद्धताओं को आकर्षित करने में बेहद सफल रहा है।

लॉजिस्टिक्स और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में भी गुजरात ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। राज्य में देश के कुल स्टेट हाईवे नेटवर्क का लगभग 10% हिस्सा है, जो राष्ट्रीय औसत का लगभग चार गुना है। राष्ट्रीय एक्सप्रेसवे की सर्वाधिक अनुमानित लंबाई (635 किलोमीटर) गुजरात में है, जबकि देश के कुल रेलवे नेटवर्क का 7% हिस्सा भी राज्य में स्थित है। रिपोर्ट के अनुसार, कम टर्नअराउंड टाइम और बेहतर लॉजिस्टिक्स दक्षता ने सप्लाई चेन को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया है।

29% सस्ती बिजली और निर्बाध आपूर्ति ने उद्योगों को दिया लागत लाभ

रिपोर्ट में गुजरात के पावर सेक्टर को भी निवेश आकर्षित करने वाला महत्वपूर्ण कारक बताया गया है। राज्य में औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए बिजली की लागत राष्ट्रीय औसत से लगभग 29% कम है। वहीं, औसतन 23.8 घंटे प्रतिदिन बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की जाती है, जो बड़े राज्यों के औसत से अधिक है। प्रतिस्पर्धी बिजली दरों और विश्वसनीय आपूर्ति ने राज्य को उद्योगों के लिए अधिक आकर्षक बनाया है।

31% निर्यात हिस्सेदारी, MSME इकोसिस्टम और मजबूत वित्तीय अनुशासन बने निवेश का आधार

रिपोर्ट के अनुसार, गुजरात की मजबूत आर्थिक बुनियाद भी निवेशकों के विश्वास का प्रमुख कारण है। भारत के कुल मर्चेंडाइज निर्यात में राज्य की 31% हिस्सेदारी है, जबकि वित्त वर्ष 2019-24 के दौरान गुजरात की GSDP वृद्धि दर देश में तीसरे स्थान पर रही। राज्य का प्रति व्यक्ति GSDP 2,64,232 है, जो बड़े राज्यों के औसत से 67% अधिक है। इसके साथ ही, गुजरात के MSME बेस में माइक्रो और स्मॉल एंटरप्राइजेज (MSEs) का एक बहुत ही स्वस्थ अनुपात है (जिसमें यह पूरे देश में चौथे स्थान पर है), जो राज्य में एक अत्यंत गतिशील और लचीला औद्योगिक इकोसिस्टम बनाता है।

वित्तीय प्रबंधन के मामले में भी गुजरात ने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। वित्त वर्ष 2024 में राज्य का राजकोषीय घाटा GSDP का केवल 2.81% रहा, जो सभी राज्यों में सबसे कम है। वहीं, राज्य की कुल देनदारियां लगभग 18% हैं, जो बड़े राज्यों के औसत से करीब 40% कम हैं। यह मजबूत वित्तीय अनुशासन निवेशकों के लिए दीर्घकालिक स्थिरता का संकेत देता है।

614 अटल टिंकरिंग लैब्स ने नवाचार आधारित औद्योगिक इकोसिस्टम को दी मजबूती

रिपोर्ट में गुजरात के नवाचार और स्टार्टअप इकोसिस्टम को भी निवेश आकर्षण का महत्वपूर्ण आधार माना गया है। वित्त वर्ष 2025 तक राज्य में 614 अटल टिंकरिंग लैब्स (ATLs) स्थापित की जा चुकी हैं। प्रति एक लाख आबादी पर 1.24 ATLs के साथ गुजरात बड़े राज्यों के औसत से लगभग 19% आगे है, जिससे नवाचार आधारित उद्योगों और भविष्य की तकनीकों के लिए मजबूत आधार तैयार हुआ है।

समुद्र तटीय क्षेत्रों के सिंह नीलगाय और जंगली सूअरों के शिकार पर निर्भर : सिंह केवल पालतू पशुओं का ही शिकार करके जीवित रहते हैं; इस धारणा को नए अध्ययन ने गलत सिद्ध किया

- सौराष्ट्र के तटीय क्षेत्रों में लगभग 100 सिंहों का निवास। गिर वन के बाहर तटीय क्षेत्रों में रहने वाले सिंह खेती की फसलों को नुकसान पहुँचाने वाली नीलगायों तथा जंगली सूअरों का शिकार करके किसानों के सच्चे मित्र बने
- अंतरराष्ट्रीय पीयर-रिव्यूड जर्नल 'कंजर्वेशन' में प्रकाशित शोध में पता चला है कि तटीय क्षेत्रों के सिंहों द्वारा किए जाने वाले कुल शिकार में लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा वन्य जीवों के शिकार का है, अर्थात ये सिंह नीलगाय, जंगली सूअर तथा आवारा पशुओं का शिकार करते हैं
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने विश्व में एशियाई सिंहों के एकमात्र अंतिम आश्रय स्थल गिर में सिंहों के दीर्घकालीन संरक्षण के लिए 'प्रोजेक्ट लायन' शुरू किया है
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात सरकार ने राज्य में वन्यजीव संरक्षण के लिए लगातार समर्पित प्रयास किए हैं और उनके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं
- "यह शोध अध्ययन दर्शाता है कि गिर वन के बाहर रहने वाले सिंह नीलगाय तथा जंगली सूअरों का शिकार करके यहाँ के किसानों को लाभ पहुँचाते हैं। नीलगायों तथा जंगली सूअरों की आबादी पर प्राकृतिक रूप से नियंत्रण रखकर सिंह खेती की फसलों को होने वाले नुकसान को कम करते हैं और किसानों की सहायता करते हैं", श्री अर्जुन मोढवाडिया, वन एवं पर्यावरण मंत्री, गुजरात

गांधीनगर : यदि आप किसी से भी पूछें कि सिंह गिर वन्यजीव अभयारण्य के बाहर निकलकर समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों में मुक्त रूप से क्यों घूम रहे हैं, तो सबसे सामान्य उत्तर यही मिलेगा कि जंगल के बाहर पालतू पशु बड़ी संख्या में होते हैं, इसलिए सिंह वहाँ जाते हैं और उन्हीं पालतू पशुओं का शिकार करके जीवित रहते हैं। हालाँकि; हाल ही में किए गए एक अध्ययन में यह धारणा गलत सिद्ध हुई है।

इस अध्ययन में खुलासा हुआ है कि गुजरात के तटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले एशियाई सिंह पालतू पशुओं की अपेक्षा वन्यजीवों के शिकार पर अधिक निर्भर हैं। ये निष्कर्ष उस व्यापक धारणा को गलत सिद्ध करते हैं कि गिर के जंगलों के बाहर रहने वाले सिंह अपने अस्तित्व के लिए मुख्य रूप से पालतू पशुओं पर निर्भर रहते हैं।

वर्ष 2025 में आयोजित 16वीं सिंह गणना के अनुसार वर्तमान में गुजरात में 891 एशियाई सिंह हैं। यह संख्या गुजरात की वन्यजीव संरक्षण नीति की सफलता को सिद्ध करती है।

अंतरराष्ट्रीय पीयर-रिव्यूड जर्नल कंजर्वेशन में प्रकाशित शोध में पता चला है कि समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों के सिंहों द्वारा किए जाने वाले कुल शिकार (बायोमास) में लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा वन्यजीवों से प्राप्त होता है, जो गिर संरक्षित क्षेत्र के बाहर भी सिंहों के विस्तारित हो रहे आवास का श्रेष्ठ इकोलॉजिकल स्वास्थ्य का संकेत देता है।

जूनागढ वन वृत्त के वन संरक्षक तथा इस अध्ययन के सह-लेखक श्री मोहन राम ने कहा कि, "हमारे अध्ययन में मार्च और अप्रैल 2024 के दौरान जूनागढ, गिर सोमनाथ, अमरेली, भावनगर और पोरबंदर के तटीय जिलों से एकत्र किए गए सिंहों के मल के 160 नमूनों का विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन में पता चला कि सिंहों के आहार का 64 प्रतिशत हिस्सा नीलगाय तथा जंगली सूअर जैसे वन्य जीवों का था, जबकि आवारा पशुओं का हिस्सा केवल 31 प्रतिशत था।"

श्री मोहन राम ने जोड़ा, "सभी शिकारी प्रजातियों में नीलगाय सिंहों के भोजन का प्रमुख स्रोत है, जो कुल उपभोग किए गए बायोमास का आधे से अधिक (51 प्रतिशत) हिस्सा रखती है। जंगली सूअर दूसरा सबसे महत्वपूर्ण वन्य शिकार था, जबकि आवारा पशुओं में गाय तथा भैंस आदि का सबसे बड़ा हिस्सा था।"

डायटरी पैटर्न ऑफ एशियाटिक लायन्स इन द कोस्टल इकोसिस्टम ऑफ सौराष्ट्र, गुजरात, इंडिया" शीर्षक वाला यह अध्ययन मोहन राम, आराधना साहू, नित्यानंद श्रीवास्तव, कृतज्ञा वदर, रोहित चौधरी और लहर झाला द्वारा तैयार किया गया है तथा यह कंजर्वेशन जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

गुजरात के वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा, "74वें स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एशियाई सिंहों के दीर्घकालीन संरक्षण एवं सुरक्षा पर केन्द्रित एक महत्वाकांक्षी पहल 'प्रोजेक्ट लायन' शुरू की थी। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार ने राज्य में वन्यजीवों के संरक्षण के लिए लगातार समर्पित प्रयास किए हैं।"

श्री अर्जुन मोढवाडिया ने आगे जोड़ा, "यह शोध अध्ययन स्पष्ट करता है कि गिर के जंगलों के बाहर सिंहों की आबादी नीलगाय तथा जंगली सूअर जैसे फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले प्राणियों का शिकार करके किसानों की सहायता कर रही है। इन प्राणियों की आबादी पर प्राकृतिक नियंत्रण रखकर सिंह फसलों को होने वाले नुकसान को कम करते हैं।"

"महत्वपूर्ण बात यह है कि मानव आबादी के बीच रहने के बावजूद सिंह मुख्य रूप से प्राकृतिक शिकार पर ही निर्भर रहे हैं। गुजरात में सिंह संरक्षण का यह सफल मॉडल विश्वभर में वन्यजीव संरक्षण के लिए एक उदाहरण माना जाता है," वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री प्रवीण माली ने कहा।

धारणा से विपरीत निष्कर्ष आए

इस शोध के निष्कर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे शोधकर्ताओं की मूल धारणा से बिल्कुल विपरीत हैं। शोधकर्ताओं का पहले यह मानना था कि मानव आबादी वाले तटीय क्षेत्रों में वन्यजीवों की कमी होने के कारण सिंह पालतू पशुओं पर अधिक निर्भर होंगे, परंतु अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि गुजरात के तटीय क्षेत्रों में नीलगाय और जंगली सूअरों की स्वस्थ आबादी सिंहों को अधिकांशतः प्राकृतिक शिकार पर ही निर्भर रहने में सहायता कर रही है। परिणामस्वरूप; पालतू पशुओं पर दबाव कम हो सकता है और मानव-सिंह संघर्ष को टाला जा सकता है।

शोधकर्ताओं ने उल्लेख किया है कि समुद्र तटीय इकोसिस्टम अब एशियाई सिंहों की तीन महत्वपूर्ण सैटेलाइट आबादियों को आश्रय देता है : दक्षिण-पश्चिम तटीय पट्टी, दक्षिण-पूर्व तटीय पट्टी तथा भावनगर की तटीय पट्टी। ये तीनों क्षेत्र सिंहों के विस्तारित हो रहे साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने हैं।

इस अध्ययन के अनुसार, सौराष्ट्र के तटीय क्षेत्रों में 100 से अधिक सिंह निवास करते हैं और पनप रहे हैं। यह स्थिति गुजरात के दीर्घकालीन संरक्षण प्रयासों की सफलता का प्रमाण है।

आवारा और छोड़ दिए गए पशु सिंहों का आसान शिकार

इस अध्ययन के अनुसार तटीय क्षेत्रों के सिंहों का भोजन मुख्यतः नीलगाय और जंगली सूअरों पर केन्द्रित है। यह तथ्य दर्शाता है कि शिकार की प्रचुरता और आवास की गुणवत्ता सिंहों की भोजन संबंधी आदतों पर गहरा प्रभाव डालती है। शोधकर्ताओं ने अवलोकन किया कि गाय और भैंस सिंहों के भोजन का हिस्सा अवश्य हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश पशु आवारा, छोड़ दिए गए (निःशक्त) पशु अथवा जंगली बन चुके पशु होते हैं। सौराष्ट्र के कुछ भागों में दूध न देने वाले वृद्ध पशुओं को छोड़ देने की प्रथा के कारण ऐसे पशु बड़ी संख्या में दिखाई देते हैं। सिंहों के लिए ये पशु आसान शिकार बनते हैं।

मुख्यमंत्री गांधीनगर के महुन्द्रा गांव के प्रगतिशील किसान के प्राकृतिक खेती फार्म पर पहुंचे

- भविष्य की पीढ़ी और जमीन, दोनों के स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक खेती के अलावा कोई विकल्प नहीं है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- मुख्यमंत्री ने जमीन में कार्बन की मात्रा बढ़ाने और रोगमुक्त समाज के लिए प्राकृतिक खेती अपनाने का आह्वान किया
- श्री भूपेंद्र पटेल ने साधारण ग्रामजन की तरह खाट पर बैठकर ग्रामीणों और किसानों के साथ सहज संवाद किया
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'बैक टू बेसिक' के विचार को ग्रामीण किसानों तक पहुंचाने का मुख्यमंत्री का अभिनव प्रयोग : प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के खेतों का प्रत्यक्ष दौरा

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्राकृतिक कृषि फार्म का दौरा कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'बैक टू बेसिक' यानी अपनी जड़ों की ओर लौटने के विचार को ग्रामीण किसानों तक व्यापक रूप से पहुंचाने का अभिनव दृष्टिकोण अपनाया है।

इस संदर्भ में मुख्यमंत्री ने गांधीनगर तहसील के महुन्द्रा गांव के प्राकृतिक खेती करने वाले एक प्रगतिशील युवा किसान अल्पेश पटेल के मॉडल फार्म का दौरा किया। उन्होंने गौशाला में गायों के रखरखाव और गाय-आधारित प्राकृतिक खेती की जानकारी प्राप्त करने में गहरी रुचि दिखाई।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस प्राकृतिक फार्म का दौरा किया और महुन्द्रा के ग्रामजनों के साथ खाट पर बैठकर एक साधारण ग्रामीण की तरह प्रेरणादायी सहज संवाद किया।

मुख्यमंत्री ने कहा हमारी भविष्य की पीढ़ी को बचाने के लिए प्राकृतिक खेती ही सही विकल्प है। उन्होंने साफ-साफ कहा कि यह रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक इस्तेमाल से होने वाले गंभीर रोगों से मानव स्वास्थ्य को बचाने और मानव जाति तथा जमीन की सेहत को सुधारने का सेवा यज्ञ है।

जमीन के गिरते स्वास्थ्य पर चिंता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि आज जमीन में कार्बन की मात्रा चिंताजनक रूप से कम हो गई है। जमीन और मानव शरीर, दोनों का स्वास्थ्य बेहतर हो, इसके लिए प्राकृतिक खेती ही एकमात्र मजबूत विकल्प है। उन्होंने प्रत्येक नागरिक से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की जिम्मेदारी उठाने का अनुरोध किया।

पानी की कमी और अनियमित बारिश की समस्या के स्थायी समाधान के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से देशभर में चल रहे 'अमृत सरोवर' और 'खेत तालाब' के अभियान का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सुजलाम सुफलाम जैसी योजनाओं के तहत पहले नर्मदा पाइपलाइन के तीन किलोमीटर के दायरे में आने वाले तालाबों को ही भरा जाता था। अब, सरकार ने इस सीमा को बढ़ाकर 7 किलोमीटर कर दिया है।

प्रधानमंत्री द्वारा शुक्रवार को ही शुरू की गई हाइड्रोजन ट्रेन का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज, जब पूरी दुनिया ग्रीन एनर्जी की दिशा में आगे बढ़ रही है, तब भारत भी इस क्षेत्र में किसी से पीछे रहने वाला नहीं है।

मुख्यमंत्री ने दैनिक जीवनशैली में भी पर्यावरण हितैषी बदलाव लाने की अपील की। उन्होंने सब्जी इत्यादि वस्तुओं की बिक्री के लिए प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कागज की थैलियों (पेपर बैग) का उपयोग करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार उद्योग एवं पर्यावरण, दोनों का समान रूप से ख्याल रखते हुए संतुलित विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

इस संवाद कार्यक्रम के दौरान प्राकृतिक खेती करने वाले प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभव साझा किए और दूसरे किसानों को भी रसायन मुक्त प्राकृतिक खेती की ओर मुड़ने की प्रेरणा दी। किसानों ने कृषि वैज्ञानिकों एवं सरकारी अधिकारियों की ओर से मिल रहे लगातार मार्गदर्शन की सराहना भी की।

मुख्यमंत्री ने शिवपुरा कंपा में प्रगतिशील किसान श्री शांतिलाल पटेल के मॉडल फार्म का भी दौरा किया।

इस अवसर पर कृषि विभाग के प्रधान सचिव श्री आर.सी. मीणा, प्रभारी कलेक्टर श्री जे.एस. प्रजापति, जिला विकास अधिकारी श्री हसरत जैस्मीन, जिला कृषि अधिकारी श्री शशिकांत पटेल, जिला बागवानी अधिकारी सुश्री हेतलबेन और 'आत्मा' के प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री वरमोरा सहित स्थानीय अग्रणी और बड़ी संख्या में किसान एवं ग्रामजन मौजूद रहे।

सूरत में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में वीवर्स परामर्श महासम्मेलन आयोजित हुआ

- सरकारी प्रोत्साहनों और आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से वस्त्र उद्योग वैश्विक बाजार में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा : उप मुख्यमंत्री
- उप मुख्यमंत्री ने पर्यावरण अनुकूल और हाई क्वालिटी वाले 'वैल्यू एडिशन' उत्पादों पर जोर देने का अनुरोध किया
- सूरत में आगामी समय में 10 से 15 हजार नए एयर जेट लूम्स मशीनें संचालित होंगी

गांधीनगर : विश्वभर में टेक्सटाइल नगरी के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले सूरत शहर में वस्त्र उद्योग के सतत विकास और आधुनिकीकरण को गति देने के उद्देश्य से सूरत के सणिया हेमाद में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरक उपस्थिति में 'सिक्योर एयरजेट वीवर्स एसोसिएशन' द्वारा 'वीवर्स परामर्श महासम्मेलन' आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि गुजराती जिस बाजार में कदम रखते हैं, वह बाजार हमारा बन जाता है। व्यावसायिक सफलता गुजरातियों के खून में है। एयर जेट के क्षेत्र में भी यही स्थिति है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आगामी पाँच वर्षों में विश्व में सबसे अधिक एयर जेट मशीनें हमारे सूरत में संचालित होंगी। उन्होंने कहा कि सरकारी प्रोत्साहनों और आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से वस्त्र उद्योग वैश्विक बाजार में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा।

पर्यावरण अनुकूल और हाई क्वालिटी वाले 'वैल्यू एडिशन' उत्पादों पर जोर देते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि उद्योगकारों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में टिके रहने के लिए पर्यावरण के अनुकूल तथा हाई क्वालिटी वाले वैल्यू एडिशन युक्त उत्पादों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

उन्होंने सूरत के टेक्सटाइल उद्योगकारों की साहसिकता की सराहना करते हुए कहा कि सूरत हमेशा नई टेक्नोलॉजी अपनाने में अग्रसर रहा है, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण वर्तमान में संचालित लगभग 30 हजार अत्याधुनिक 'एयर जेट लूम्स' मशीनें हैं। उद्योगकारों के सकारात्मक दृष्टिकोण और अनुकूल वातावरण के कारण आगामी एक वर्ष में ही सूरत में 10 से 15 हजार नई एयर जेट मशीनें संचालित होंगी, जिससे रोजगार और उत्पादन के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित होंगे।

सरकार उद्योगकारों के साथ खड़ी है, यह विश्वास दिलाते हुए श्री हर्ष संघवी ने कहा कि टेक्सटाइल सेक्टर को प्रोत्साहन देने वाली सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ सुदूरवर्ती वीवर्स तक पहुँचाया जाएगा। सूरत के कपड़े को वैश्विक स्तर पर बड़ा बाजार मिले, इसके लिए भविष्य में 'एक्सपोर्ट फेसीलिटेशन' और 'क्लस्टर डेवलपमेंट' पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों से रोजगार के लिए सूरत आकर स्थायी रूप से बसे नागरिकों के सपनों को साकार करने में योगदान देने वाले सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

राज्य सरकार द्वारा दिए जा रहे प्रोत्साहनों की जानकारी देते हुए श्री संघवी ने कहा कि टेक्सटाइल पॉलिसी के अंतर्गत केवल एक वर्ष में गुजरात के व्यापारियों को 8 हजार करोड़ रुपए का भुगतान किया गया है। प्रशासनिक प्रक्रिया को तेज बनाते हुए पहले एमएसएमई के अंतर्गत प्रतिदिन 170 फाइलें स्वीकृत होती थीं, जो अब बढ़कर 397 हो गई हैं। आने वाले समय में प्रतिदिन 500 व्यापारियों को प्रोत्साहन राशि सीधे उनके बैंक खातों में उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जा रही है।

उन्होंने कहा कि हाल में 'पीएम मित्रा पार्क' की टेंडर प्रक्रिया चल रही है, जिससे दक्षिण गुजरात में टेक्सटाइल का सबसे बड़ा इको-सिस्टम विकसित करने के अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। उप मुख्यमंत्री ने उद्योगकारों से वैल्यू एडिशन के साथ गारमेंटिंग क्षेत्र की ओर आगे बढ़ने का अनुरोध किया और दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि सूरत सहित पूरा दक्षिण गुजरात देश का सबसे बड़ा गारमेंटिंग हब बनेगा।

इस परामर्श महासम्मेलन का मुख्य उद्देश्य सूरत में तेजी से बढ़ते एयर जेट लूम्स उद्योग के विस्तार, नई टेक्नोलॉजी को अपनाने तथा वस्त्र उद्योग में वैल्यू एडिशन बढ़ाकर वैश्विक स्तर पर सूरत की पकड़ को और मजबूत बनाना है।

इस महासम्मेलन में सिक्योर एयरजेट वीवर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री मयूरभाई धोलिया, ग्रीनलैब डायमंड के अध्यक्ष श्री मुकेशभाई पटेल, गोल्डी सोलर के अध्यक्ष श्री ईश्वरभाई धोलकिया, फोस्टा के अध्यक्ष श्री कैलाश हकीम, अग्रणी श्री मनहरभाई साचपरा, श्री संदीपभाई केडिया, औद्योगिक जोन आयुक्त श्री जे. पी. दवे सहित टेक्सटाइल उद्योग के अग्रणी, वीवर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि, व्यापारी मित्र तथा बड़ी संख्या में उद्योगकार उपस्थित रहे।

गुजरात पुलिस के प्रदर्शन पर सवाल: अपराधियों के सार्वजनिक जुलूस से कहीं अधिक सख्त कानूनी कार्रवाई आवश्यक है

निर्भीक, निष्पक्ष, निष्पक्ष छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत.
गुजरात में आपराधिक गतिविधियों में शामिल लतीफ गिरोह ने लंबे समय तक गुजरात में एक आपराधिक साम्राज्य कायम रखा था, जिसमें हत्या, अपहरण, चोरी, सार्वजनिक रूप से शराब पीना और जुआ खेलना, जबरन वसूली और किसी की संपत्ति पर कब्जा करना शामिल था।

एक ओर गुजरात में पोरबंदर के सरवन मूंजा और भूरा मूंजा के गिरोह और उनके साथी हत्या, अपहरण, चोरी, जबरन वसूली, सार्वजनिक रूप से शराब पीना और जुआ खेलना, जबरन वसूली करना और किसी की संपत्ति को लंबे समय तक हड़पना जैसे विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में सक्रिय थे। लेकिन उस समय के अधिकारी, गृह मंत्री और सरकार उस समय के बहादुर अधिकारियों को दिए गए निर्देशों के अनुसार निर्णय लेते थे। एक बार अहमदाबाद में, जब छोटे-बड़े कांस्टेबल और अधिकारी लतीफ के दरियापुर पोपटियावाड़ इलाके में अपराधियों को उनके घरों पर बुलाने या गिरफ्तार करने गए, तो पुलिस लतीफ के गिरोह और उसके साथियों से डरती थी। लेकिन सरकार की मदद से, महिला आईपीएस अधिकारी गीता जौहरी जैसी बहादुर अधिकारियों ने, महिला होने के बावजूद, लतीफ के घर में घुसकर उसे कॉलर पकड़कर गिरफ्तार कर लिया।

गुजरात के पुलिस अधिकारियों में ए.के. सुरलिया, आशीष भाटिया, पी.के. दत्ता, सतीश वर्मा, तरुण बरोट, कुलदीप शर्मा जैसे कुछ बहादुर अधिकारियों के नाम पर अपराधियों के मूत्र के नमूने जारी किए गए। गुजरात में शंकरसिंह वाघेला की सरकार के दौरान लतीफ का एनकाउंटर हुआ और उसके गिरोह और साथियों को लंबे समय तक जेल में रखा गया। कुछ अपराधी आज भी आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। इसी तरह, बहादुर अधिकारी सतीश वर्मा को पोरबंदर में सरवन मूंजा और भूरा मूंजा के गिरोहों का सफाया करने के लिए नियुक्त किया गया था। तत्कालीन गृह मंत्री और सरकार ने गिरोहवार और उत्पाती तत्वों को जेल में डाल दिया। आज तक लतीफ गिरोह और पोरबंदर गिरोह के साथियों ने किसी अपराध का जिक्र तक नहीं किया है। छोटे-बड़े अपराधी बातचीत में कहते थे, "मैं लतीफ गिरोह का सदस्य हूं या पोरबंदर गिरोह का सदस्य हूं।" वे उनके आशीर्वाद या निर्देशों पर आपराधिक गतिविधियां करते थे। लेकिन आज तक गुजरात में ऐसा कोई गिरोह सक्रिय नहीं है।

उस दौर के अपराधी हत्या, अपहरण, चोरी, जबरन वसूली, सार्वजनिक रूप से शराब पीना, जबरन वसूली और संपत्ति हड़पने जैसे अपराधों के लिए सार्वजनिक रूप से अपराधियों का जुलूस नहीं निकालते थे। वे अपराधियों को हिरासत में लेते थे या उनसे अपराध कबूल करवाने के लिए अन्य तृतीय-श्रेणी की सजाओं का इस्तेमाल करते थे। वे उन्हें विशेष सेवाएं/उपचार देते थे ताकि वे

भविष्य में कोई और अपराध न करें। लेकिन यह सब बंद कमरे में होता था। वे ऐसा सार्वजनिक रूप से 'सिंघम' बनने या अपनी प्रशंसा के लिए नहीं करते थे। वे गुजरात सरकार की नज़र में अच्छा बनने के लिए नहीं, बल्कि अपने कर्तव्य के लिए काम करते थे। वे अपने कर्तव्य का पालन करते थे। वे इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि गुजरात के किसी भी शहर में अशांति न फैले। ऐसे बहादुर अधिकारी कभी भी सार्वजनिक समारोहों में नहीं जाते थे, फोटो सेशन नहीं करते थे, रैलियां नहीं निकालते थे या किसी भी तरह का प्रचार नहीं करते थे। लेकिन वर्तमान एसओजी डीसीपी आईपीएस अधिकारी राजदीप सिंह नाकुम द्वारा छोटे-बड़े अपराधियों का सार्वजनिक रूप से जुलूस निकालना एक आईपीएस अधिकारी के लिए शोभा नहीं देता। उन्हें अपने एसी कार्यालय में बैठकर निजी जांच अधिकारी, पुलिस जांच अधिकारी या उनकी टीम से कार्रवाई करानी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट और गुजरात हाई कोर्ट के कानूनी आदेशों के अनुसार, किसी छोटे कांस्टेबल या उच्च अधिकारी द्वारा अपराधियों का जुलूस सार्वजनिक सड़क पर निकालना शर्मनाक घटना है। हम अपराधियों को संरक्षण या समर्थन नहीं देना चाहते। किसी भी अपराधी को उसके अपराध के लिए कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। लेकिन सार्वजनिक रूप से अपराधी को 5-10 थप्पड़ मारने से अपराध नहीं रुकेगा। उन्हें ऐसे कागजात तैयार करने चाहिए जिससे वे उच्च अधिकारियों के निर्देशों पर कानून की किसी भी खामी से बच न सकें। उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जानी चाहिए, जिससे उन्हें लंबी जेल की सजा हो और अल्पकालिक जमानत न मिल सके।

सार्वजनिक सड़क पर अपराधियों का वीडियो बनाना या उनकी तस्वीरें लेना जनता के मन से उनके प्रति भय दूर नहीं करेगा। उन्हें केवल उनके द्वारा किए गए अपराध से संबंधित कानून की धाराओं के अनुसार कागजात तैयार करके लंबी अवधि के लिए कारावास में डाल देना चाहिए। उनकी गरिमा तभी बहाल होगी जब उन्हें अदालत के आदेशानुसार या किसी अन्य तृतीय-श्रेणी की सजा का उपयोग करके कानून के अनुसार एक बंद कमरे में रखा जाए और उन्हें विशेष सेवा/उपचार दिया जाए ताकि वे भविष्य में कोई अन्य अपराध न करें और जीवन भर के लिए अपराध की दुनिया से विमुख हो जाएं। या फिर उन्हें इस मानसिकता में ढाल दिया जाए कि वे फिर कभी कोई अपराध नहीं करेंगे।

लेकिन कुछ समय पहले अहमदाबाद क्राइम ब्रांच के डीसीपी शरद सिंघल को चंदोला झील में एक छोटे अपराधी के बारे में सूचना मिली, जिसके पास देसी पिस्तौल थी। इस सूचना के आधार पर डीसीपी शरद सिंघल खुद अपनी टीम के साथ अपराधी को पकड़ने चंदोला झील गए। और कहा जाता है कि जब अपराधी ने डीसीपी शरद सिंघल पर पैडल और चाकू से जानलेवा हमला किया, तो डीसीपी शरद सिंघल ने अपने बगल में खड़े पीआई से रिवॉल्वर छीनकर योगी की यूपी सरकार के पेटेंट की तरह अपराधी के पैर में गोली मार दी। जब तक डीसीपी शरद सिंघल ने पीआई से रिवॉल्वर छीनकर अपराधी के पैर में गोली मारी, तब तक अपराधी पैडल और चाकू ताने वहीं खड़ा था? एक उच्च पदस्थ अधिकारी के ऐसे शब्द जनता को स्वीकार्य नहीं हैं। ठीक वैसे ही जैसे अहमदाबाद शहर की क्राइम ब्रांच के डीसीपी को अपने एसी अधिकारी, पीआई, पीएसआई या अपनी टीम से उनके अनुभव के अनुसार ही काम लेना चाहिए। लेकिन आज के गुजरात में कुछ और ही हो रहा है। आज के अधिकारियों की मानसिकता यही है कि वे सरकार की नज़रों में अपना नाम दर्ज कराएं, सरकार से पुरस्कार प्राप्त करें और जनता से प्रशंसा पाएं। गृह मंत्री और सरकार यह साबित करना चाहते हैं कि हमारी सरकार और हमारे पुलिस अधिकारी जनता के हित में काम कर रहे हैं। लेकिन यह सब झूठी प्रशंसा पाने और खुद का प्रचार करने का प्रयास है।

जैसे सूरत में फिलहाल 42 पुलिस थानों के प्राइवेट जासूस, पीएसआई या कर्मचारी, अपराध (डीसीबी) शाखा के अधिकारी, इकोसेल, साइबर क्राइम, पीसीबी जैसी विभिन्न शाखाओं के अधिकारी या स्थानीय स्तर के अधिकारी आपराधिक गतिविधियों को दबाने में लगे रहते हैं। लेकिन सूरत में कुछ अलग ही चल रहा है। यहां तक कि एसओजी के कार्यक्षेत्र में शामिल न होने वाले काम भी एसओजी के डीसीपी नाकुम कर रहे हैं, चाहे वह नासिरनगर का विध्वंस हो या जमानत पर रिहा हुए छोटे-बड़े अपराधों के अपराधियों को एसओजी थाने बुलाकर उन्हें सार्वजनिक रूप से 5-10 कोड़े मारना, ताकि उनका नाम सरकार की नजरों में आए या जनता से प्रशंसा मिले। गुजरात के उपमुख्यमंत्री और गृह मंत्री को एसओजी के डीसीपी नाकुम जैसे अधिकारियों का तबादला गुजरात के संवेदनशील क्षेत्रों में करना चाहिए, जहां वे गुजरात में अशांति फैलाने वाले, आतंकवाद विरोधी गतिविधियों को अंजाम देने वाले, गुजरात सीमा पर बड़े अपराध करने वाले या करोड़ों रुपये की ड्रग्स की तस्करी करने वालों को पकड़ सकें। और ऐसे काम उनसे वहां ले लिए जाने चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में 'मातुश्री मणीबेन मावजीभाई स्वरूपचंद वोरा वीबीसी भवन' का लोकार्पण किया

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में शनिवार को श्री कच्छ वागड बे चौवीसी स्थानकवासी जैन विशा श्रीमाळी समाज (वीबीसी समाज) द्वारा नवनिर्मित 'मातुश्री मणीबेन मावजीभाई स्वरूपचंद वोरा वीबीसी भवन' का लोकार्पण किया।

लोकार्पण के बाद मुख्यमंत्री ने समग्र भवन का वर्चुअल टूर कर वहाँ उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की तथा समाज के इस भगीरथ कार्य की सराहना की। इस अवसर पर वेजलपुर के विधायक श्री अमितभाई ठाकोर भी उपस्थित रहे।

सामाजिक उत्तरदायित्व की परंपरा को और सुदृढ़ बनाते हुए वीबीसी समाज की ओर से राज्य की बेटियों की शिक्षा के लिए कार्यरत 'मुख्यमंत्री कन्या केळवणी निधि' योजना में 1,11,111 रुपए का चेक सहयोग स्वरूप मुख्यमंत्री को भेंट किया गया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर वीबीसी समाज के उत्साह एवं एकता की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में समाज का कोई भी व्यक्ति आर्थिक कठिनाइयों के कारण वंचित न रहे; इसके लिए इस समाज ने हमेशा प्रशंसनीय प्रयास किए हैं। अहमदाबाद के हृदय समान जोधपुर क्षेत्र में इस भव्य भवन का निर्माण वास्तव में गौरव की बात है।

हाल ही में मनाई गई आषाढ़ी दूज और कच्छी नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र को आत्मसात कर हमें आगे बढ़ना है। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री ने देश में शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा पर विशेष बल दिया है।

पर्यावरण और भविष्य की आवश्यकताओं का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के 'मिशन लाइफ' का संदर्भ देते हुए दैनिक जीवन में पानी, बिजली और पेट्रोल की बचत कर प्रकृति के संरक्षण का आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने देश में हाइड्रोजन ट्रेन के संचालन प्रारंभ होने का गौरवपूर्वक उल्लेख करते हुए कहा कि अब भारत किसी भी क्षेत्र में पीछे रहने वाला नहीं है और वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' का संकल्प अवश्य पूरा होगा।

मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि अतीत में वागड क्षेत्र की पानी की जो विकट समस्या लोकगीतों में वर्णित होती थी, उसे प्रधानमंत्री ने नर्मदा का जल कच्छ तक पहुँचाकर इतिहास बना दिया है। मुख्यमंत्री ने शिक्षा को किसी भी समाज की प्रगति की मजबूत नींव बताते हुए आश्वस्त किया कि समाजहित के कार्यों में राज्य सरकार सदैव कंधे से कंधा मिलाकर समाज के साथ खड़ी रहेगी।

इस अवसर पर वेजलपुर के विधायक श्री अमितभाई ठाकोर ने समाज की उदारता और साहसिकता की सराहना करते हुए कहा कि आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में अहमदाबाद शिक्षा का वैश्विक केंद्र बन रहा है। ऐसे समय में जोधपुर क्षेत्र में निर्मित यह अत्याधुनिक भवन बाहर से आने वाले विद्यार्थियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायी सिद्ध होगा। इसरो तथा आध्यात्मिक संस्थाओं के समीप स्थित इस परिसर में उपलब्ध विशाल कक्षों और बहुउद्देशीय सभागार जैसी सुविधाएँ युवाओं को बड़े विचारों के साथ वैश्विक मंच पर आगे बढ़ने की नई ऊर्जा प्रदान करेंगी।

कार्यक्रम के शुरुआत में संस्था के अग्रणी श्री कीर्तिभाई संघवी ने प्रासंगिक उद्बोधन देते हुए संस्था की सामाजिक सेवा गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा नवनिर्मित भवन के निर्माण के पीछे के उद्देश्यों और उससे समाज को होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला।

उल्लेखनीय है कि; अहमदाबाद के जोधपुर क्षेत्र में निर्मित इस आधुनिक परिसर में सुविधाजनक गर्ल्स हॉस्टल, बॉयज हॉस्टल तथा अतिथि भवन की उत्कृष्ट व्यवस्था उपलब्ध है। इस हाईटेक भवन में विद्यार्थियों के लिए स्वस्थ एवं स्वच्छ भोजन की व्यवस्था के लिए सुव्यवस्थित रसोई, शांत वातावरण वाली अत्याधुनिक पुस्तकालय, पूर्णतः वाई-फाई से सुसज्जित कंप्यूटर लैब, फिटनेस के लिए जिम, सेमिनार के लिए कॉन्फ्रेंस हॉल तथा विशाल कम्युनिटी हॉल उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, 24×7 सुरक्षा व्यवस्था के साथ बेसमेंट एवं ग्राउंड फ्लोर पार्किंग जैसी सभी मूलभूत सुविधाओं से इस परिसर को सज्ज किया गया है।

इस लोकार्पण समारोह में मुख्यमंत्री के विशेष कार्याधिकारी तथा वीबीसी समाज के अग्रणी श्री धीरज पारेख सहित गुजरात तथा देश-विदेश के विभिन्न स्थानों से पधारे समस्त वीबीसी परिवार के अग्रणी, श्रेष्ठी, विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि व बड़ी संख्या में समाज के भाई-बहन उपस्थित रहे।

वैवाहिक जीवन में माता-पिता का सीमित हस्तक्षेप आवश्यक है, समुदाय के नेताओं ने परिवार में शांति बनाए रखने की अपील की है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत
हमारे समाज में, लड़के और लड़की की शादी कराने के लिए कुछ रीति-रिवाज और दिखावटी प्रथाएं प्रचलित हैं। शादी से पहले, दोनों पक्ष एक-दूसरे के प्रति इतना प्यार दिखाते हैं कि वे अपने सगे भाई-बहनों से भी अधिक एक-दूसरे को प्यार करते हैं। उनमें इतना स्नेह होता है। वे इतने उत्साहित होते हैं और एक-दूसरे पर इतना भरोसा करते हैं कि उनका रिश्ता अटूट है। वे एक-दूसरे के खिलाफ कुछ भी नहीं सुनते और न ही एक-दूसरे का अपमान सहन करते हैं। जब ऐसे दो प्रेमी मिलते हैं, तो ऐसा लगता है कि वे एक-दूसरे के लिए अपनी जान देने को तैयार हैं, लेकिन वास्तविकता में ऐसा नहीं होता। शादी के बाद, लड़की अपने ससुराल जाती है और अगर उसकी सास, देवर या ननद कोई गलती कर दें या कुछ कह दें, तो लड़की का मोबाइल फोन बजने लगता है। मोबाइल फोन आने के बाद, मां का व्यवहार पूरी तरह बदल जाता है और ऐसा लगता है मानो वह लड़की को हमेशा के लिए अपने घर में रखना चाहती हो, वह बार-बार फोन करके माहौल खराब करती है। लड़की दिन में एक-दो बार अपने माता-पिता को फोन करके उनका हालचाल पूछती है, लेकिन कोई भी मना नहीं करता। माता-पिता ने अठारह से बीस वर्ष की आयु में लड़की को जन्म दिया और पाला-पोसा है, इसलिए स्वाभाविक रूप से वे उसे अपने भावों से पुकारते हैं। इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

विवाह के बाद लड़की की ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है और उसे छोटी-छोटी बातों पर माता-पिता से शिकायत करने के बजाय सास-ससुर को माता-पिता की तरह मानना चाहिए, जिससे घर में कलह का माहौल बन जाता है। इसी वजह से शांत घर में भी कलह शुरू हो जाती है। अक्सर झगड़े का कोई कारण नहीं होता, लेकिन माता-पिता या किसी रिश्तेदार या बड़े के अहंकार के कारण लड़की के घर में बेवजह का हंगामा मच जाता है। जहाँ लड़की या बेटी माता-पिता की सलाह मानती है, वहाँ झगड़े जल्दी सुलझ जाते हैं। जहाँ शांति से रहने की इच्छा होती है, लेकिन जब लड़की दूध, सब्ज़ी या किसी भी कारण से बाहर नहीं जाती, तो परिवार में झगड़े होना आश्चर्य की बात है। जब लड़की के माता-पिता कहते हैं कि मेरी बेटी और उसके दामाद के बीच कोई समस्या नहीं है, तो क्या? ऐसे आरोप सही नहीं होते। अगर लड़का नशे का आदी है या उसकी बुरी आदतें हैं, तो लड़की का दूसरे लड़के से विवाह शांतिपूर्ण होना चाहिए। नशे और बुरी आदतों के साथ-साथ ज़बान पर भी लगाम नहीं लगाई जाती, और बड़ों का आदर नहीं किया जाता, तो परिवार बहुत दुखी हो जाता है। हम इसी सलाह और निर्देश के साथ निवेदन करते हैं कि लड़के या लड़की के जीवन में माता-पिता या ससुराल वालों की सलाह सीमित दायरे में ही होनी चाहिए। लड़की को ससुराल वालों या घर के किसी भी सदस्य के विरुद्ध किसी भी प्रकार की उकसाहट से दूर रहना चाहिए। किसी भी लड़के या लड़की को अपने माता-पिता की उपस्थिति में अपनी सास के खिलाफ गलत टिप्पणी करने से बचना चाहिए। कृपया ध्यान दें कि यह संयुक्त बयान समाज में किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न न करने के शुभ इरादे से जारी किया गया है।

डी.सी. सोलंकी अध्यक्ष
भाई लाल बी. वैष्णव उपाध्यक्ष,
बिपिनभाई राठौड़ उपाध्यक्ष
कांतिभाई बी. सोलंकी महासचिव,
मयंकभाई जे. सोलंकी महासचिव
शशिकांत सोलंकी

देश भर में एक लाख से अधिक सरकारी स्कूल एक ही शिक्षक पर निर्भर हैं, जिससे शिक्षा व्यवस्था के सामने गंभीर प्रश्न खड़े हो रहे हैं

(निर्भीक, निष्पक्ष, निष्पक्ष छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत.
चाहे भारत हो या विश्व, शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों से प्राप्त ज्ञान नहीं है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चे में चिंतन शक्ति, रचनात्मकता, नैतिक मूल्य, सामाजिक समझ और जीवन कौशल विकसित होते हैं। लेकिन जब एक ही शिक्षक पाँच या छह कक्षा के विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ाता है, तो प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान देना असंभव हो जाता है। परिणामस्वरूप, शिक्षा का स्तर गिर जाता है। और इसका सबसे बड़ा नुकसान गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों के लाखों बच्चों को उठाना पड़ता है।

लेकिन जब सरकारी आंकड़े बताते हैं कि देश के एक लाख से अधिक सरकारी स्कूल केवल एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं, तो यह न केवल चिंता का विषय है, बल्कि इससे पूरी शिक्षा नीति पर गंभीर सवाल उठते हैं। केंद्र सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत जारी यूडीआईएसई+ 2025-26 की रिपोर्ट के अनुसार, देश भर के एक लाख से अधिक स्कूलों में केवल एक ही शिक्षक कार्यरत है। ऐसे शिक्षक को एक साथ विभिन्न कक्षाओं के छात्रों को पढ़ाना पड़ता है। उन्हें स्कूल के प्रशासनिक कार्यों की जिम्मेदारी भी संभालनी पड़ती है। उन्हें सरकारी योजनाओं को लागू करना होता है और साथ ही चुनाव से लेकर जनगणना तक के कर्तव्यों का निर्वाह भी करना पड़ता है।

ऐसी स्थिति में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अपेक्षा करना कितना व्यावहारिक है? राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा का सपना प्रस्तुत किया है। लेकिन ये सुंदर नीतिगत दस्तावेज तभी सार्थक होते हैं जब पर्याप्त शिक्षक हों, उचित बुनियादी ढांचागत सुविधाएं हों और प्रभावी कार्यान्वयन हो। शिक्षकों के बिना या केवल एक शिक्षक पर आधारित विद्यालय किसी भी शिक्षा नीति के उद्देश्यों को पूरा नहीं कर सकता। ग्रामीण, आदिवासी और दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षकों की कमी विशेष रूप से गंभीर है। जहां शिक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है, वहां सुविधाओं की न्यूनतम उपलब्धता विकास की संभावनाओं को कमजोर करती है। शिक्षकों के पद वर्षों तक खाली पड़े रहते हैं। तबादलों की नीति में असंतुलन है और नई भर्तियों में देरी होती है। इन समस्याओं का सीधा शिकार छात्र होते हैं। अंततः, सवाल सिर्फ एक लाख स्कूलों का नहीं है। सवाल लाखों बच्चों के भविष्य का है। एक ऐसे देश में जहां हर बच्चे को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का संकल्प है, वहां एक ही तरह की शिक्षा देने वाले स्कूलों का अस्तित्व ही नीति और उसके क्रियान्वयन के बीच के अंतर को उजागर करता है। अब सरकार के लिए इस चुनौती को गंभीरता से लेने और त्वरित एवं प्रभावी कदम उठाने का समय है। क्योंकि सशक्त शिक्षकों के बिना सशक्त राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता, सशक्त शिक्षा के बिना नहीं। क्योंकि भारत एक युवा देश के रूप में जाना जाता है। विश्व में सबसे अधिक छात्र आबादी वाले देश में, शिक्षा प्रणाली की मजबूती ही विकास का सच्चा आधार है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम

- **अंत्योदय अन्न योजना तथा प्रायोरिटी हाउसहोल्ड परिवारों को वितरित किए जाने वाले गेहूँ तथा चावल पर राशन की दुकान के संचालकों को चुकाए जाने वाले कमीशन में वृद्धि**
- **उचित मूल्य की दुकान के संचालकों का कमीशन 150 रुपए से बढ़ाकर 185 रुपए करने को मंजूरी दी गई**
- **राज्य के 17,000 से अधिक राशन दुकानदारों को मिलेगा सीधा लाभ**

गांधीनगर, : गुजरात सरकार ने राष्ट्रीय अन्न सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए)-2013 अंतर्गत सभी अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई) और प्रायोरिटी हाउसहोल्ड (पीएचएच) परिवारों को वितरित किए जाने वाले गेहूँ और चावल पर उचित मूल्य (राशन) की दुकानों के संचालकों को चुकाए जाने वाले कमीशन में वृद्धि की है। खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता मामलों के विभाग द्वारा किए गए प्रस्ताव के अनुसार उचित मूल्य की दुकानों यानी राशन की दुकानों के संचालकों को अब तक गेहूँ व चावल वितरण पर प्रति क्विंटल 150 रुपए कमीशन का भुगतान किया जाता था, जिसमें 35 रुपए की वृद्धि की गई है। इस प्रकार; अब राशन दुकानदारों को 185 रुपए कमीशन का भुगतान किया जाएगा।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व तथा खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामलों के विभाग के मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी और राज्य मंत्री श्री पूनमचंद बरंडा के मार्गदर्शन में लिए गए इस निर्णय से राज्य के 17,000 से अधिक राशन दुकान संचालकों को सीधा लाभ मिलेगा।

इस निर्णय के अनुसार उचित मूल्य की दुकानों के संचालकों को 1 अप्रैल, 2026 से लागू हो; इस प्रकार बढ़े हुए कमीशन का भुगतान किया जाएगा।

प्रस्ताव के अनुसार राशन की दुकानों के संचालकों के कमीशन में इस वृद्धि के लिए राज्य सरकार ने 67.20 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है।

राशन की दुकानों के संचालकों ने परिवहन, मजदूरी खर्च, रखरखाव तथा अन्य संचालन खर्च में हुई वृद्धि को देखते हुए आर्थिक सहयोग की मांग की थी। उल्लेखनीय बात यह है कि इस मंजूरी से सार्वजनिक वितरण प्रणाली का संचालन और सुदृढ़ बनेगा और राष्ट्रीय अन्न सुरक्षा अधिनियम अंतर्गत करोड़ों पात्र परिवारों तक अनाज वितरण अधिक आसानी से होगा।

प्रस्ताव के अनुसार बढ़े हुए कमीशन के लिए आवंटित 67.20 करोड़ रुपए में से 52.61 करोड़ रुपए सामान्य श्रेणी अंतर्गत, 4.11 करोड़ रुपए अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) श्रेणी अंतर्गत और 10.48 करोड़ रुपए जनजाति क्षेत्र उपयोजना (टीएएसपी) श्रेणी अंतर्गत खर्च किए जाएंगे।

सामाख्याली-गांधीधाम रेलखंड पर नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत सामाख्याली, वोंध एवं भचाऊ स्टेशनों के बीच चौहरिकरण (Quadrupling) एवं ऑटोमेटिक सिग्नलिंग परियोजना के कमीशनिंग कार्य के संबंध में नॉन-इंटरलॉकिंग (NI) कार्य हेतु ब्लॉक लिया जा रहा है। यह कार्य सामाख्याली–गांधीधाम रेलखंड पर रेल अवसंरचना के आधुनिकीकरण तथा परिचालन क्षमता एवं सुरक्षा बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस परियोजना के अंतर्गत नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगा। प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

(A) पूर्णतः निरस्त (Fully Cancelled) ट्रेनें

1. गाड़ी संख्या 09416 गांधीधाम–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल तथा गाड़ी संख्या 09415 बांद्रा टर्मिनस–गांधीधाम स्पेशल 23 एवं 30 जुलाई 2026 को निरस्त रहेगी।
2. गाड़ी संख्या 09037 बांद्रा टर्मिनस–भुज स्पेशल 18, 23, 25 एवं 30 जुलाई 2026 को तथा गाड़ी संख्या 09038 भुज–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 19, 24, 26 एवं 31 जुलाई 2026 को निरस्त रहेगी।
3. गाड़ी संख्या 12965 बांद्रा टर्मिनस–भुज एक्सप्रेस 28 जुलाई एवं 04 अगस्त 2026 को तथा गाड़ी संख्या 12966 भुज–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 24 एवं 31 जुलाई 2026 को निरस्त रहेगी।
4. गाड़ी संख्या 19406 गांधीधाम–पालनपुर एक्सप्रेस तथा गाड़ी संख्या 19405 पालनपुर–गांधीधाम एक्सप्रेस 19 जुलाई से 04 अगस्त 2026 तक निरस्त रहेगी।
5. गाड़ी संख्या 22951 बांद्रा टर्मिनस–गांधीधाम एक्सप्रेस 24 एवं 31 जुलाई 2026 को तथा गाड़ी संख्या 22952 गांधीधाम–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 23 एवं 30 जुलाई 2026 को निरस्त रहेगी।
6. गाड़ी संख्या 09009 बांद्रा टर्मिनस–भुज स्पेशल 19 एवं 26 जुलाई 2026 को तथा गाड़ी संख्या 09010 भुज–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 20 एवं 27 जुलाई 2026 को निरस्त रहेगी।
7. गाड़ी संख्या 12959 बांद्रा टर्मिनस–भुज एक्सप्रेस 25 जुलाई एवं 01 अगस्त 2026 को तथा गाड़ी संख्या 12960 भुज–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 27 जुलाई एवं 03 अगस्त 2026 को निरस्त रहेगी।
8. गाड़ी संख्या 09011 बांद्रा टर्मिनस–भुज स्पेशल 21 एवं 28 जुलाई 2026 को तथा गाड़ी संख्या 09012 भुज–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 22 एवं 29 जुलाई 2026 को निरस्त रहेगी।

(B) आंशिक रूप से निरस्त (Partially Cancelled) ट्रेनें

गाड़ी संख्या 94801 अहमदाबाद–भुज नमो भारत रैपिड रेल 23 जुलाई 2026 से 03 अगस्त 2026 तक ध्रांगध्रा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा ध्रांगध्रा–भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 94802 भुज–अहमदाबाद नमो भारत रैपिड रेल 24 जुलाई 2026 से 04 अगस्त 2026 तक भुज और ध्रांगध्रा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं

गाड़ी संख्या 14321 बरेली–भुज एक्सप्रेस 27, 29 एवं 31 जुलाई तथा 02 एवं 03 अगस्त 2026 को भिलड़ी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा भिलड़ी–भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 14322 भुज–बरेली एक्सप्रेस 30 जुलाई तथा 01, 02 एवं 03 अगस्त 2026 को भिलड़ी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा भुज–भिलड़ी के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 14311 बरेली–भुज एक्सप्रेस 28 एवं 30 जुलाई तथा 01 अगस्त 2026 को चांदलोडिया स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा चांदलोडिया–भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 14312 भुज–बरेली एक्सप्रेस 28, 29 एवं 31 जुलाई तथा 04 अगस्त 2026 को चांदलोडिया स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा भुज–चांदलोडिया के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 20686 केएसआर बेंगलुरु–गांधीधाम एक्सप्रेस 01 अगस्त 2026 को अहमदाबाद स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा अहमदाबाद–गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 20685 गांधीधाम–केएसआर बेंगलुरु एक्सप्रेस 04 अगस्त 2026 को अहमदाबाद स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा गांधीधाम–अहमदाबाद के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 16335 गांधीधाम–नागरकोइल एक्सप्रेस 31 जुलाई 2026 को अहमदाबाद स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा गांधीधाम–अहमदाबाद के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 16336 नागरकोइल–गांधीधाम एक्सप्रेस 28 जुलाई 2026 को अहमदाबाद स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा अहमदाबाद–गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 22903 बांद्रा टर्मिनस–भुज एसी एक्सप्रेस 31 जुलाई एवं 02 अगस्त 2026 को अहमदाबाद स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा अहमदाबाद–भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 22904 भुज–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 01 एवं 03 अगस्त 2026 को अहमदाबाद स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा भुज–अहमदाबाद के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 11092 पुणे–भुज एक्सप्रेस 03 अगस्त 2026 को अहमदाबाद स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा अहमदाबाद–भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 11091 भुज–पुणे एक्सप्रेस 05 अगस्त 2026 को अहमदाबाद स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा भुज–अहमदाबाद के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 20936 इंदौर–गांधीधाम एक्सप्रेस 02 अगस्त 2026 को अहमदाबाद स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा अहमदाबाद–गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी एवं गाड़ी संख्या 20935 गांधीधाम–इंदौर एक्सप्रेस 03 अगस्त 2026 को अहमदाबाद स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा गांधीधाम–अहमदाबाद के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे यात्रा से पूर्व ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य अद्यतन जानकारी के लिए रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।